नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 194, नई दिल्ली, सोमवार 19 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



● 02 आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ : सुधारित दिशात्मक तत्व ड्ड वात–पित्त–कफ संबंध
● 06 पंखों की फड़फड़ाहट से आगे: जंगली पक्षी प्रकृति की मदद से उड़ान को
● 08 सरायकेला के लिए झारखंड सरकार एक केयरटेकर मात्र, आखिर इतिहास दफनाने में क्यों लगे हैं

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।



संजय बाठला
मुख्य संपादक

प्रधान संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - संजय कुमार बाठला का सवाल पाठकों से: क्या आपको लगता है यह वैश्विक असंतोष है, विदेशी प्रभाव है, या दोनों का मिश्रण? इस पर बहस लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण होनी चाहिए-

क्या Gen Z आंदोलन विदेशी षडयंत्र है या जनहित में मांग?

लेख और सवाल: संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक, परिवहन विशेष

चार देशों की अराजकता से भारत तक — तथ्य, विश्लेषण, सवाल | देश को कमजोर करने की साजिश या युवाओं की लोकतांत्रिक आवाज?

मुख्य बिंदु

– 1. दावा — साभार संदेश: फ्रांस, बेल्जियम, स्पेन और चिली में पिछले एक हफ्ते से अराजकता फैल रही है, और चारों देशों ने अमेरिका की विदेश नीति का विरोध किया था

– 2. पैटर्न का आरोप: हर देश में आंदोलन शिक्षा व्यवस्था, हॉस्टल-मकान किराया, युवाओं के मुद्दों के नाम पर शुरू हुआ और बाद में हिंसक हुआ

– 3. भारत से जोड़ना: भारत ने अमेरिका की शर्तों पर ट्रेड डील, रूसी तेल पर रोक, टैरिफ दबाव को मानने से इनकार किया — इसलिए भारत में भी NEET, स्कूल ठीक करो, वोट चोरी जैसे मुद्दों पर आग लगाने की कोशिश हो रही है, ऐसा संदेश में दावा किया गया

– 4. मूल प्रश्न: क्या जेन-जेड का भारत में हो रहा प्रकरण इन्हीं मुद्दों से जुड़ता है और विदेशी षडयंत्र का हिस्सा हो सकता है?

– 5. दूसरा पक्ष: विशेषज्ञों का मत है कि हर देश के आंदोलन के स्थानीय आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारण होते हैं, समानता का अर्थ साजिश नहीं होता

विस्तृत विश्लेषण — तथ्य बनाम अनुमान - चार देशों में क्या हो रहा है?

फ्रांस: संदेश के अनुसार फ्रांस ने ईरान मुद्दे पर अमेरिका के हमले का विरोध किया, फिर स्कूल ठीक करने के नाम पर आंदोलन शुरू हुआ। वास्तव में फ्रांस में युवा, छात्र और श्रमिक संगठन लंबे समय से शिक्षा बजट, पेंशन सुधार, बेरोजगारी और महंगाई के खिलाफ प्रदर्शन करते रहे हैं। वहाँ की अराजकता के कारण घरेलू नीतियाँ अधिक प्रभावी मानी जाती हैं।

बेल्जियम: शिक्षा व्यवस्था के नाम पर आंदोलन की बात की गई। बेल्जियम में भाषा, क्षेत्रीय सरकारें और शिक्षा के बजट को लेकर अक्सर विरोध होते हैं। वहाँ भी आंदोलनों का स्थानीय प्रशासनिक कारण प्रमुख है।

स्पेन: युवाओं के लिए मकान और हॉस्टल किराया कम करने की मांग का उल्लेख है। स्पेन में हाउसिंग क्राइसिस वास्तविक है — बड़े शहरों में किराए में भारी वृद्धि ने युवाओं को आंदोलन के लिए प्रेरित किया है। यह यूरोप के कई देशों की साझा समस्या है।

चिली: चिली ने वेनेजुएला मुद्दे पर अमेरिका का विरोध किया और वहाँ भी शिक्षा सुधार की मांग पर आंदोलन शुरू हुआ। चिली में 2019 से ही शिक्षा, पेंशन और असमानता के खिलाफ व्यापक आंदोलन होते रहे हैं, जिनकी जड़ें घरेलू असंतोष में हैं।

भारत की स्थिति: भारत के संदर्भ में कहा गया है कि पहले NEET के नाम पर, फिर स्कूल ठीक करो के नाम पर, अब वोट चोरी के नाम पर देश में आग लगाने की कोशिश हो रही है।

भारत में युवाओं की मांगें —
1. परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता,
2. शिक्षा की गुणवत्ता,
3. रोजगार,
4. चुनावी प्रक्रिया में विश्वास

— ये लोकतांत्रिक समाज में सामान्य और वैध मांगें हैं। इन मांगों को उठाना और उनका हिंसक रूप लेना, दो अलग-अलग बातें हैं।

क्या यह विदेशी षडयंत्र है? - साजिश के पक्ष में तर्क जो दिया जा रहा है:

- चारों देशों ने अमेरिका की नीति का विरोध किया
- चारों में लगभग एक ही समय में शिक्षा-युवा मुद्दे पर आंदोलन शुरू हुआ
- भारत भी अमेरिका के आर्थिक दबाव के आगे नहीं झुका
- सोशल मीडिया पर एक साथ समान हैशटैग और पैटर्न दिखता है

संतुलित विश्लेषण — क्या कहते हैं तथ्य:

- चारों देशों की अर्थव्यवस्था, शिक्षा प्रणाली और युवा बेरोजगारी की समस्या अलग-अलग है, लेकिन महंगाई, आवास संकट और भविष्य की चिंता दुनिया भर के युवाओं की साझा चिंता है
- सोशल मीडिया के दौर में एक देश का आंदोलन दूसरे देश के युवाओं को प्रेरित करता है — इसे 'प्रभाव' कहा जा सकता है, 'षडयंत्र' नहीं, जब तक ठोस प्रमाण न हो
- अब तक किसी अंतरराष्ट्रीय जांच एजेंसी या आधिकारिक स्रोत ने यह प्रमाणित नहीं किया है कि इन चार देशों के आंदोलन किसी एक विदेशी शक्ति ने संगठित रूप से करवाए
- इतिहास में विदेशी हस्तक्षेप के उदाहरण रहे हैं, इसलिए सतर्कता जरूरी है, लेकिन हर आंतरिक विरोध को विदेशी साजिश मानना भी लोकतांत्रिक बहस को कमजोर करता है

इसलिए यहां सवाल यह नहीं है कि — क्या भारत को कमजोर करने की कोई ताकत चाहती है? सवाल यह है कि — क्या इस समय इसका कोई ठोस प्रमाण है?

जनहित में मांग या देश को कमजोर करने की साजिश?

जनहित पक्ष: यदि मांगें शिक्षा, रोजगार, किराया, परीक्षा पारदर्शिता और मतदाता विश्वास की हैं, तो वे जनहित की मांगें हैं। उन्हें सुनना और संवाद से हल करना लोकतंत्र की मजबूती है।

चिंता का पक्ष: यदि आंदोलन का उद्देश्य संवाद नहीं, बल्कि आगजनी, तोड़फोड़ और अराजकता फैलाना हो, तो यह जनहित नहीं, देश को कमजोर करने वाली प्रवृत्ति बन जाती है, चाहे वह विदेशी प्रेरणा से हो या घरेलू राजनीति से।

1. चार देश, एक पैटर्न? फ्रांस, बेल्जियम, स्पेन और चिली — जहाँ पिछले 1 हफ्ते से अराजकता फैलाने के दावे सोशल मीडिया में वायरल हैं

– 2. फ्रांस: ईरान मुद्दे पर अमेरिका का विरोध करने के बाद स्कूल ठीक करने के नाम पर आंदोलन शुरू हुआ, फिर पूरे फ्रांस में आग का दावा

– 3. बेल्जियम: ईरान युद्ध में अमेरिका का विरोध करने के बाद शिक्षा व्यवस्था के नाम पर आंदोलन और अराजकता का दावा



– 4. स्पेन: ईरान के खिलाफ युद्ध में साथ देने से इंकार के बाद युवाओं के नाम पर मकान और हॉस्टल के किराए में कमी की मांग पर आंदोलन, फिर आग का दावा

– 5. चिली: वेनेजुएला में तख्तापलट के मुद्दे पर अमेरिका का विरोध करने के बाद शिक्षा सुधार के नाम पर आंदोलन और अराजकता का दावा

– 6. भारत की स्थिति: ट्रेड डील, रूसी तेल, टैरिफ और अमेरिकी दबाव को मानने से इंकार के बाद भारत में भी NEET, स्कूल ठीक करो और वोट चोरी के नाम पर आग लगाने की कोशिश के दावे

– 7. सवाल: क्या जेन Z का भारत में हो रहा पूरा प्रकरण इन्हीं मुद्दों से जुड़ता है और यह विदेशी षडयंत्र का हिस्सा हो सकता है?

पहला दावा — विदेशों में क्या हुआ? चार देशों ने अमेरिका की विदेश नीति के साथ असहमति दिखाई, वहीं अचानक छात्र/शिक्षा/आवास के नाम पर बड़े आंदोलन शुरू हुए और अराजकता फैली।

फ्रांस में स्कूल ठीक करने, बेल्जियम में शिक्षा व्यवस्था, स्पेन में किराए में कमी, चिली में शिक्षा सुधार — सभी के मुद्दे स्थानीय और युवाओं से जुड़े हुए थे। लेकिन दावा यह है कि पैटर्न एक ही है — स्थानीय मांग से शुरुआत, फिर व्यापक अराजकता।

दूसरा दावा — भारत में भी वही कोशिश? भारत ने:

- अमेरिका की शर्तों पर ट्रेड डील करने से मना कर दिया
- रूस से तेल खरीदने पर रोक को मना कर दिया
- टैरिफ का कोई असर नहीं हुआ
- अमेरिका के किसी भी दबाव को मानने से इंकार कर दिया

इसके बाद भारत में भी इसी तरह की आग लगाने की कोशिश के दावे किए गए:

- पहले NEET के नाम पर — सरकार ने सूझबूझ से संभाला
- स्कूल ठीक करो आंदोलन — जनता ने ही फेल कर दिया, ऐसा दावा है
- अब वोट चोरी के नाम पर देश में किसी तरह आग लगाने की कोशिश हो रही है

मुद्दा एक ही? दावे के अनुसार मुद्दा एक ही है — किसी तरह भारत को झुकाया जाए, इसकी तरक्की को रोका जाए।

दूसरा पक्ष — जनहित में मांग भी हो सकती है? यहाँ संपादकीय संतुलन जरूरी है। युवाओं के आंदोलनों का हर आंदोलन विदेशी षडयंत्र नहीं होता।

- शिक्षा, परीक्षा, रोजगार, किराए और पारदर्शिता जैसी मांगें भारत सहित हर देश के युवाओं की वास्तविक समस्याएं हैं
- जेन Z डिजिटल पीढ़ी है — वह सूचना, जवाबदेही और पारदर्शिता चाहती है
- NEET, स्कूल व्यवस्था और वोटर लिस्ट जैसी मांगों के पीछे जनता का सीधा हित भी जुड़ा है
- कई बार सरकारों ने इन्हीं आंदोलनों से सीखकर सुधार भी किए हैं

इसलिए सवाल सिर्फ यह नहीं है कि आंदोलन किसने शुरू किया, बल्कि यह भी है कि मांग कितनी जायज है और उसका तरीका कितना शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक है।

निष्कर्ष — क्या करें?

1. तथ्य जांच जरूरी: चार देशों के दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है — वायरल चित्र और वीडियो अक्सर संदर्भ से बाहर प्रस्तुत किए जाते हैं
2. युवाओं की आवाज़ सुनें: जेन Z को सिर्फ षडयंत्र का हिस्सा कहना उसकी जायज चिंताओं को नजरअंदाज करना होगा
3. अराजकता से बचें: लोकतंत्र में विरोध का अधिकार है, लेकिन हिंसा और आगजनी किसी भी मांग को कमजोर करती है
4. सरकार और जनता दोनों सतर्क रहें: सरकार पारदर्शिता बढ़ाए, युवा शांतिपूर्ण तरीके अपनाएं — यही देश की तरक्की का रास्ता है

> क्या देश को कमजोर करने की साजिश है या जनहित में मांग? — यह प्रश्न अभी खुला है। जवाब तथ्यों, जांच और शांतिपूर्ण संवाद से ही मिलेगा, वायरल दावों से नहीं।

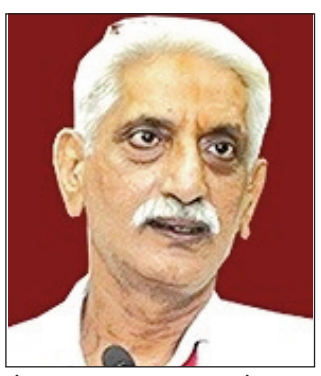
अंतिम निष्कर्ष: Gen Z आंदोलन को केवल एक ही चश्मे से नहीं देखना चाहिए। युवाओं की आवाज को दबाना गलत है, और देश को अस्थिर करने की कोशिश को हल्के में लेना भी गलत है।

देश की तरक्की को रोकने की कोशिश हो सकती है, लेकिन उसे रोकने का सबसे मजबूत तरीका है — तथ्य आधारित जांच, पारदर्शी संवाद, युवाओं की वैध मांगों का समाधान, और हिंसा के प्रति शून्य सहनशीलता।

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं - नौवीं देवी मां सिद्धिदात्री

माँ की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे

प्रस्तुति: ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड | परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक | टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) | ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख सांझा



संजय कुमार बाठला — प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू — सह संपादक

– 1. नवां दिवस: नवरात्रि के नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है। सिद्धि का अर्थ है — अलौकिक शक्ति, पूर्णता और मोक्ष प्रदान करने वाली देवी

– 2. स्वरूप: मां कमल के आसन पर विराजमान हैं, चार भुजाओं वाली — दाहिने हाथ में चक्र और शंख, बाएं हाथ में कमल और गदा। वाहन — सिंह

– 3. शक्ति: मां अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व — आठ सिद्धियों की दात्री हैं

– 4. महिमा: भगवान शिव ने भी सिद्धि प्राप्ति के लिए मां सिद्धिदात्री की आराधना की थी। तभी उनका एक रूप अर्धनारीश्वर कहलाया

– 5. पूजन विधि: महानवमी को कन्या पूजन, हवन, नौ कन्याओं को भोजन, वस्त्र और दक्षिणा — माँ का आशीर्वाद प्राप्त करने का विशेष विधान है

आराधना, पूजा और कथा शारदीय नवरात्रों का समापन नवमी तिथि को मां सिद्धिदात्री की आराधना से होता है। यह दिन भक्तों के लिए साधना की पूर्णता का दिन है।

मां का स्वरूप और कथा: पुराणों के अनुसार, जब सृष्टि का निर्माण हुआ, तब देवताओं और असुरों में शक्ति का संघर्ष हुआ। मां सिद्धिदात्री ने अपने दिव्य रूप से समस्त सिद्धियों को धारण किया। शिव जी ने मां की कठोर तपस्या की और सिद्धि प्राप्त की, जिससे वे सिद्धेश्वर कहलाए। उनकी कृपा से ही भगवान शिव को अर्धनारीश्वर रूप प्राप्त हुआ।

पूजा विधि: नवमी के दिन ब्रह्ममुहूर्त में स्नान कर मां को लाल वस्त्र, गुलाब, कमल पुष्प, अक्षत, रोली, सिंदूर, पंचामृत, नारियल और मखाने की खीर का भोग अर्पित करें। मां के मंत्र — "ॐ ह्रीं क्लीं सिद्धिदात्री देव्यै नमः" का 108 बार जाप करें।

मुख्य मंत्र:

> या देवी सर्वभूतेषु माँ सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

कन्या पूजन का महत्व: नवमी को नौ कन्याओं को मां के नौ रूप मानकर भोजन कराना, चरण धोना, तिलक लगाना और दक्षिणा देना अत्यंत फलदायी माना जाता है। यही इस व्रत की पूर्णता है।

सिद्धियों का वरदान: मां सिद्धिदात्री की आराधना से भक्त को अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं — अणिमा (सूक्ष्म होना), महिमा (बड़ा होना), गरिमा (भारी होना), लघिमा (हल्का होना), प्राप्ति (सब पा लेना), प्राकाम्य (इच्छापूर्ति), ईशित्व (स्वामीत्व) और वशित्व (नियंत्रण)।

भक्तों से निवेदन: नवरात्रि केवल उपवास नहीं, आत्मशुद्धि, संयम, सेवा और ममता का पर्व है। मां की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे — यही कामना है हमारी।

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं — माँ की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे





आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ : दिशाओं के संशोधित तत्व और वात, पित्त, कफ का संबंध



स्वास्थ्य की हमारी इस यात्रा में उत्तर-पश्चिम दिशा को समझने की शुरुआत उसके एक स्पष्ट तत्व से होती है: उत्तर-पश्चिम = आकाश तत्व।

दोषों से इसका संबंध

भी उतना ही महत्वपूर्ण है: उत्तर-पश्चिम वात को आकाश तत्व भी प्रदान करता है; वायु को गति करने के लिए आकाश अर्थात स्थान की आवश्यकता होती है। इसे समझ लेने पर स्वास्थ्य से जुड़ी यह चर्चा कहीं अधिक तार्किक हो जाती है।

तत्व से दोष तक

वात, वायु और आकाश से मिलकर बनता है। यह गति, गतिशीलता, परिसंचरण और शारीरिक क्रियाओं के प्रवाह को नियंत्रित करता है।

पित्त, अग्नि और जल से मिलकर बनता है। यह ऊष्मा, पाचन और रूपांतरण को नियंत्रित करता है, जबकि जल उस अग्नि को नियंत्रित करता है और उसका संवहन करता है।

कफ, जल और पृथ्वी से मिलकर बनता है। यह जुड़ाव, पोषण, स्थिरता, स्निग्धता और संचय को नियंत्रित करता है।

इसलिए किसी असंतुलन का अर्थ यह नहीं कि कोई तत्व अपने आप में "खराब" है। वह अत्यधिक, कम, अवरुद्ध, जरूरत से अधिक गर्म, भार से दबा हुआ या अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने में असमर्थ हो सकता है। इस अंतर को समझने पर पूरी व्याख्या बदल जाती है।

उत्तर-पश्चिम में असंतुलन होने पर क्या दिख सकता है?

इस लेखमाला में अपनाए गए पारंपरिक मेडिकल वास्तु दृष्टिकोण के अनुसार, इस दिशाक्षेत्र में असंतुलन कुछ शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों के रूप में दिखाई दे सकता है। उदाहरण के लिए: बेचैनी, भय, दुःख, चिंता, सिर की त्वचा या पैरों में ठंडापन, हथेलियों में पसीना, पाचन या मल-मूत्र त्याग में अनियमितता तथा वे गड़बड़ियाँ जिन्हें परंपरागत रूप से प्राण, उदान, समान और अपान वायु के संदर्भ में समझाया जाता है।

कृपया "दिखाई दे सकता है" शब्दों पर ध्यान दें। ये संभावित पारंपरिक संबंध हैं; यह भविष्यवाणी नहीं कि वास्तु दोष वाले घर में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति में ये स्थितियाँ विकसित होंगी।

इनका वास्तविक स्वरूप तीन बातों पर निर्भर करता है: संपत्ति में क्या असंतुलित है, उससे तत्व या दोष का कौन-सा गुण बनता है और ज्योतिषीय कुंडली के अनुसार परिवार का कौन-सा सदस्य उसके प्रति संवेदनशील है।

एक ही दिशा के प्रभाव अलग क्यों हो सकते हैं?

इसे ऐसे समझें: किसी दिशा का बढ़ा हुआ भाग अत्यधिक फैलाव पैदा कर सकता है, जबकि भारी सामान आकाश तत्व को बाधित करता है। जनरेटर, इन्वर्टर या अग्नि जैसी गतिविधियाँ केवल अवरोध पैदा करने के बजाय गति को उत्तेजित भी कर सकती हैं।

संपत्ति की प्रत्येक स्थिति तत्व को अलग ढंग से प्रभावित करती है।

- कटा हुआ भाग कमी दर्शाता है।
- बढ़ा हुआ भाग अधिकता दर्शाता है।
- भारी भंडारण पृथ्वी तत्व और कफ जैसी रोककर रखने की प्रवृत्ति बढ़ाता है।
- जल तरलता बढ़ाता है, लेकिन जमा हुआ जल ठहराव का संकेत भी देता है।
- अग्नि पित्त जैसी गर्मी बढ़ाती है।
- विद्युत उपकरण सक्रिय या अग्नि जैसी उत्तेजना बढ़ाते हैं।
- शौचालय या सेप्टिक व्यवस्था जल के साथ अपशिष्ट और उत्सर्जन की भूमिका भी लाती है।
- गड्ढा नीचेपन पैदा करता है।
- अत्यधिक ऊँचाई या भार स्थान को घेरने और सीमित करने की स्थिति बनाता है।

इसलिए उत्तर-पश्चिम के दो अलग वास्तु दोष स्वास्थ्य में एक जैसा प्रभाव दिखाएँ, यह आवश्यक नहीं है।

दोष की अधिकता और कमी दोनों महत्वपूर्ण हैं

यहीं वात, पित्त और कफ की समझ इस लेख को अधिक उपयोगी बनाती है।

पारंपरिक दृष्टि से बढ़ा हुआ वात बेचैनी, अनियमितता, भय, रूखापन या अत्यधिक गति के रूप में दिख सकता है। कम या अवरुद्ध वात शारीरिक क्रियाओं की धीमी या बाधित गति के रूप में दिखाई दे सकता है।

बढ़ा हुआ पित्त गर्मी, जलन, चिड़चिड़ापन या अत्यधिक रूपांतरण के रूप में दिख सकता है। कम पित्त कमजोर रूपांतरण प्रक्रिया या धीमे पाचन का संकेत दे सकता है।

बढ़ा हुआ कफ भारीपन, बलगम, सूजन, द्रव के रुकने या संचय के रूप में दिख सकता है। कम कफ का अर्थ अपर्याप्त स्थिरता, पोषण या स्निग्धता हो सकता है।

इसलिए कोई उपाय करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि सामने अधिकता, कमी या अवरोध में से कौन-सी स्थिति है।

एक पाठक का उदाहरण

मान लीजिए, किसी निवासी को ऊपर चर्चा किए गए व्यापक समूह से संबंधित कोई स्वास्थ्य समस्या है, जिसका चिकित्सकीय निदान हो चुका है। सीधे यह कहने के बजाय कि "इसका कारण आपका उत्तर-पश्चिम है", मैं पहले यह पूछूँगी कि शरीर किस प्रकार के लक्षण दिखा रहा है।

- गर्मी है या ठंडापन?
- संचय है या कमी?
- अत्यधिक गति है या अवरोध?
- रूखापन है या द्रव का रुकना?
- जलन या उत्तेजना है या सुस्ती?

इसके बाद मैं ज्योतिषीय कुंडली का अध्ययन करूँगी।

यदि कुंडली में भी उसी तत्व या दोष के असंतुलन के प्रति संवेदनशीलता दिखे, तो मैं उत्तर-पश्चिम के सटीक सूक्ष्म क्षेत्र और उसके वर्तमान उपयोग की जाँच करूँगी।

यदि शरीर, ज्योतिषीय कुंडली और संपत्ति—तीनों स्तरों पर एक ही तत्व से जुड़ा संकेत मिले, तो उस संबंध पर काम करना सार्थक हो जाता है। यदि ऐसा न हो, तो हमें जबरन वास्तु से जुड़ी व्याख्या नहीं थोपनी चाहिए।

हम पूरी प्रक्रिया को दूसरे छोर से देखें हम शुरुआत घर से भी कर सकते हैं।

मान लीजिए, मुझे उत्तर-पश्चिम में कोई बड़ा असंतुलन मिलता है। तब मैं पूछ सकती हूँ कि क्या परिवार में किसी ने इस दिशाक्षेत्र से संबंधित प्रवृत्तियाँ अनुभव की हैं और क्या वे समस्याएँ मरम्मत, नवीनीकरण या उपयोग बदलने के बाद शुरू हुईं अथवा बढ़ीं।

- क्या कोई टंकी लगाई गई?
- क्या वह क्षेत्र काटा या बढ़ाया गया?
- क्या शयनकक्ष को स्टोर बना दिया गया?
- क्या मशीनरी लगाई गई?
- क्या शौचालय का स्थान बदला गया?
- क्या छत की ऊँचाई बढ़ाई गई?
- क्या भारी और अनावश्यक सामान जमा हो गया?

घटनाओं का समयक्रम उपयोगी संकेत दे सकता है। लेकिन समयक्रम का मेल भी केवल एक संकेत है, किसी चिकित्सकीय कारण का प्रमाण नहीं।

अपने घर में इसे आजमाएँ

उत्तर-पश्चिम दिशा की सही पहचान करें। अब तुरंत उसे अच्छा या बुरा कहने से बचें।

इसके बजाय पूछें:

- इसका मुख्य तत्व क्या है? आकाश।
- मैंने यहाँ क्या जोड़ा है?
- क्या मैंने इस तत्व को जरूरत से अधिक बढ़ा दिया है?
- क्या मैंने इसे दबा दिया है?
- क्या मैंने इसके विपरीत गुण जोड़ दिए हैं?
- क्या मैंने इसे पृथ्वी तत्व के भार से दबा दिया है?
- क्या मैंने अग्नि से इसे अत्यधिक गर्म कर दिया है?
- क्या मैंने गति रोक दी है?
- क्या मैंने आवश्यक खुला स्थान समाप्त कर दिया है?
- क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है?

फिर वहाँ रहने वाले लोगों पर ध्यान दें।

उस क्षेत्र में सबसे अधिक समय कौन बिताता है? वास्तव में किसमें उससे संबंधित लक्षणों का स्वरूप दिखाई दे रहा है? क्या उस व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली में भी उसी तत्व से जुड़ी संवेदनशीलता दिखाई देती है?

यह वह व्यक्तिगत स्तर है जो सामान्यीकृत वास्तु में छूट जाता है।

स्वास्थ्य की व्यापक सीख

मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु का उद्देश्य दिशाओं से बीमारियाँ जोड़कर आपको डराना नहीं है। इसका उद्देश्य संतुलन को समझना है।

शरीर को वायु चाहिए, लेकिन अनियंत्रित गति नहीं। उसे आकाश चाहिए, लेकिन अत्यधिक फैलाव नहीं। उसे अग्नि चाहिए, लेकिन जलन नहीं। उसे जल चाहिए, लेकिन उसका अनियंत्रित संचय नहीं। उसे पृथ्वी चाहिए, लेकिन जड़ता नहीं।

संपत्ति में भी इन्हीं पाँच तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

इसीलिए उत्तर-पश्चिम की व्याख्या किसी एक वस्तु या याद किए हुए एक लक्षण के आधार पर नहीं करनी चाहिए। दिशा का तत्व, दोषों का संयोजन, सटीक सूक्ष्म क्षेत्र, व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली और वास्तविक चिकित्सकीय स्थिति—इन सभी का आपसी संबंध देखना आवश्यक है।

सुधार का चरण सबसे अंत में आता है

विश्लेषण पूरा होने के बाद ही सुधार शुरू करना चाहिए।

कभी-कभी सुधार व्यावहारिक होते हैं: अनावश्यक सामान हटाना, रिसाव ठीक करना, अत्यधिक गर्मी या ठंडक कम करना, वायु संचार बेहतर करना, अनुपयुक्त स्थान पर रखे सामान या मशीनरी को हटाना अथवा कमरे के उपयोग को उचित करना।

कभी किसी कटे या बढ़े हुए भाग, गड्ढे, ऊँचाई के अंतर या संरचनात्मक विशेषता के लिए अधिक विशेषज्ञ वास्तु मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

और कभी संपत्ति में कोई सार्थक संबंध दिखाई ही नहीं देता। इस संभावना के लिए भी खुला रहना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वास्तु चिकित्सा का विकल्प नहीं है। यदि लक्षण लगातार बने रहें या गंभीर हों, तो उपयुक्त स्वास्थ्य विशेषज्ञ से परामर्श लें। मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु को चिकित्सकीय जाँच और उपचार के साथ एक पारंपरिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के रूप में अपनाया जा सकता है, उनके स्थान पर नहीं।

उत्तर-पश्चिम की चर्चा समाप्त करने से पहले स्वयं से पूछें:

"क्या यहाँ आकाश तत्व इतना संतुलित है कि वह अपनी स्वाभाविक भूमिका निभा सके?"

क्योंकि तत्व समझ में आने पर दोष को समझना आसान हो जाता है। और दोष समझ में आने पर शरीर, ज्योतिषीय कुंडली और संपत्ति के बीच का संबंध कहीं अधिक सार्थक हो जाता है।

मेडिकल वास्तु लेखमाला की हमारी यात्रा जारी है! उत्तर-पश्चिम को समझने के बाद अब हम अंतिम, लेकिन उतनी ही महत्वपूर्ण उत्तर दिशा की ओर बढ़ेंगे—उसका तत्व फिर से जल है और वात, पित्त तथा कफ से उसका रोचक संबंध है। उत्तर दिशा की ऊर्जाएँ हमारे स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि को कैसे प्रभावित कर सकती हैं?

इन संबंधों को जानिए अगले सोमवार आने वाले हमारे लेख में।

इस लेखमाला से संबंधित किसी भी प्रश्न के लिए मुझे 8750075550 पर DM या व्हाट्सऐप करें।

विजयादशमी और दशहरा : दो पर्वों का अद्भुत मिलन

हम सनातनी हिन्दुओं के लिये दशहरा और विजयादशमी दोनों ही बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार हैं जैसा हम सभी जानते ही नहीं बल्कि दोनों, विजयादशमी व दशहरा त्योहार एक ही दिन मनाते हैं क्योंकि दोनों ही पर्व एक ही दिन पड़ते हैं ।जबकि दोनों अलग-अलग त्योहार हैं, लेकिन अधिकांश लोगों द्वारा समुचित जानकारी के अभाव में विजयादशमी और दशहरे को एक ही मान लिया जाता है। उसका एक बहुत बड़ा कारण यह है कि दोनों ही त्योहार दस दिनों तक मनाये जाते हैं और दसवें दिन इनका समापन होता है।

भले ही दशहरा और विजयादशमी एक साथ अर्थात एक ही विशिष्ट दिन को पड़ते हैं, किन्तु, दोनों के मनाने की वजह एकदम अलग-अलग है क्योंकि दोनों अलग-अलग कालखण्ड में घटित घटनाओं के कारण मनाये जाते हैं और तो और दोनों के मनाने के तरीके भी अलग अलग हैं।

अब अलग-अलग कालखण्ड में घटित घटनाओं के साथ-साथ इन दोनों त्योहार के मनाने की वजह इस प्रकार है

अब सबसे पहले दशहरे पर्व के बारे में जान लें -

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रभु श्रीराम अपने पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए चौदह वर्षों के लिए वनवास को स्वीकार किया। वनवास जाते समय अनेक कारणों से उनके साथ उनकी धर्मपत्नी माता सीता और अनुज लक्ष्मण भी साथ गए।

जैसा हम सभी जानते हैं वनवास के दौरान प्रभु श्रीराम ने कई स्थानों का भ्रमण किया और फिर एक जगह कुटिया बना कर रहने लगे ।इसी बीच लंकापति रावण छल से माता सीता को उस स्थल से अपहरण करके अपने महल में स्थित अशोक वाटिका में ले गया।

प्रभु श्रीराम ने सीतामाता को बहुत खोजा और कई लोगों से सहायता ली। तथा, अन्त में पवनपुत्रहनुमानजी ने माता सीता का पता लगाया ।तदुपरान्त प्रभु श्रीरामजी ने वानर सेना की सहायता से समुद्र पर पुल बनाया और लंका पर आक्रमण कर दिया। लंकापति रावण के साथ प्रभु श्रीराम को नौ दिनों तक भयंकर युद्ध करना पड़ा। अंततः प्रभु श्रीराम ने आश्विन मास की दसवीं तिथि को



अधर्मी रावण का वध कर दुनिया को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलवाई।

इस प्रकार हम सनातनी हिन्दू प्रभु श्रीराम के इसी जीत के उपलक्ष्य में हर साल दशहरा मनाते आ रहे है।

दूसरी तरफ.... विजयादशमी भी हम सनातनी हिन्दुओं का एक अति महत्वपूर्ण त्योहार है और यह भी आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को ही पड़ता है।

विजयादशमी पर्व भी असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है तथा, यह भी दस दिनों तक चलने वाला त्योहार है हालाँकि इसमें शुरू के नौ दिनों को नवरात्र और दसवें दिन को विजयादशमी कहते हैं।

पौराणिक कथाओं के मतानुसार एक बहुत ही अधर्मी महिषासुर नाम का असुर राजा हुआ करता था, जिसे ब्रह्मा से प्राप्त वरदान की वजह से देवता समेत कोई भी उसे मार नहीं सकता था।

अपनी इसी क्षमता और शक्तियों के बल पर उसने देवताओं को हराकर इंद्रलोक तक अपना आधिपत्य हासिल कर लिया था। वह अपनी शक्ति के कारण समस्त पृथ्वीलोक पर भी अपना अधिकार चलाने लग गया था।

चूँकि महिषासुर अत्यंत ही अत्याचारी राजा था जिस कारण लोग उसके अत्याचार से त्राहिमाम त्राहिमाम कर रहे थे।

आख़िरकार त्रिदेव यानि ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों ने अन्य देवताओं की सहायता से अत्याचारी महिषासुर के अत्याचार से सबको मुक्ति दिलाने के लिये एक शक्ति की रचना की और इसी शक्ति का नाम देवी भगवती (दुर्गा) पड़ा।

देवी दुर्गा को अत्याचारी महिषासुर से नौ दिन तक लगातार भीषण युद्ध करना पड़ा लेकिन दसवें दिन देवी, जिनमें सभी देवताओं की शक्तियाँ समाहित थीं, उस अत्याचारी महिषासुर का वध किया और संसार को उसके आतंक और अत्याचार से मुक्ति दिलाई।

इसी जीत के उपलक्ष्य में हर साल देवी दुर्गा की पूजा की जाती है और इस त्यौहार को ₹विजयादशमी₹ कहा जाता है।

विजयादशमी में.... पूरे दस दिनों तक त्योहार मनाया जाता है जिसमे शुरू के नौ दिनों तक देवी की पूजा अर्चना की जाती है एवं, दसवें दिन उन मूर्तियों का किसी नदी में विसर्जन करा दिया जाता है।

कई लोग इन नौ दिनों तक व्रत रखते हैं जिसमें हमारे सर्वप्रिय योगी जी और मोदी जी भी हैं।

नवरात्र के नवें दिन नौ [९] कुँवारी कन्याओं को देवी स्वरूपा मानकर उनकी पूजा की जाती है एवं उन्हें वस्त्र वageराह प्रदान कर भोजन कराया जाता है।

विजयादशमी को शक्ति पूजा भी कहते हैं और इस दिन शस्त्र पूजा भी की जाती है। सनातनी परिवारों में - समाज में - संस्थाओं में आज शस्त्र पूजन का आयोजन पूरे हर्षोल्लास से होता आया है। कुछ जगहों पर विस्मृत हो रही इस प्रथा को स्मरण में लाने की महती आवश्यकता है। शस्त्र पूजन हमारे आत्म गौरव, आत्म बल का पोषक है।

क्योंकि, कहा जाता है कि प्रभु श्रीरामजी ने भी दशानन रावण का वध करने के पहले इस दिन देवी शक्ति की पूजा की थी और उनसे आशीर्वाद लिया था। अगर ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में बात की जाए तो विजयादशमी की घटना पहले हुई है और दशहरे की घटना बाद में। शायद इसी कारण से दुर्गा पूजा के नवरात्र के बाद हमलोग दशहरा मनाने लगते हैं...!

इस तरह यह सर्वथा सत्य है कि विजयादशमी और दशहरा दोनों ही असत्य पर सत्य की विजय एवं बुरी शक्तियों पर अच्छी शक्ति की विजय का ही त्योहार है।



धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

19 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 3 — रचनात्मकता, संवाद, अभिव्यक्ति, आशावाद और पहचान

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 3 आपकी नेतृत्व ऊर्जा में संवाद और रचनात्मकता जोड़ता है। नया विचार रखें, महत्वपूर्ण कॉल करें या अपने काम को सामने लाएं, लेकिन आर्थिक निर्णय केवल छवि या दिखावे के आध न लें।
रिश्ते: आपका आत्मविश्वास बातचीत को जीवंत बनाएगा। प्रशंसा खुलकर करें, लेकिन हर चर्चा को जीतने वाली बहस न बनाएं।
सावधानी: अहंकार में खर्च, अधीर भाषा और विवरण तैयार होने से पहले बड़े परिणाम का वादा करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक मजबूत विचार स्पष्ट रूप से रखें और दूसरे व्यक्ति के योगदान के लिए भी जगह दें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 3 आपको चुपचाप इंतजार करने के बजाय अपनी बात रखने को कहता है। क्लाइंट बातचीत, सहयोग या रचनात्मक सुझाव आत्मविश्वास से रखने पर अवसर खोल सकता है।
रिश्ते: आज भावनाएं व्यक्त करना आसान होगा। अपनी बात कहें, लेकिन सामान्य शब्दों या आवाज के बदलाव का जरूरत से ज्यादा अर्थ न निकालें।
सावधानी: अधिक संवेदनशीलता, अनिर्णय और मूड सुधारने के लिए खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी जरूरत सरल शब्दों में कहें और सकारात्मक संवाद पर ध्यान दें।

मूलांक 3

धन व करियर: आपके मूलांक 3 और दिन के अंक 3 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। रचनात्मकता, संवाद, पहचान और आशावाद बढ़ेंगे। प्रस्तुति, शिक्षण, मार्केटिंग या रचनात्मक विचार शुरू करने के अच्छा दिन है, यदि योजना व्यावहारिक रहे।
रिश्ते: आकर्षण और गर्मजोशी मजबूत रहेगी। हल्की-फुल्की बातचीत या सच्ची प्रशंसा रिश्ते को बेहतर कर सकती है, बशर्ते शब्दों के पीछे ईमानदारी हो।
सावधानी: बिखरे फोकस, सामाजिक खर्च और उत्साह में अनावश्यक प्रतिबद्धता से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक रचनात्मक प्राथमिकता चुनें और उसे स्पष्ट, अनुशासित दिशा दें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 3 आपकी व्यवस्थित दुनिया में लचीलापन और अभिव्यक्ति लाता है। अपनी योजना समझाएं, आंकड़े स्पष्ट रखें और काम या धन की समस्या हल करते समय थोड़ी रचनात्मकता स्वीकार करें।
रिश्ते: आप व्यावहारिक कामों से प्यार दिखाते हैं, जबकि अपनों को आज शब्द और भावनात्मक उपस्थिति चाहिए हो सकती है। केवल जिम्मेदारी को पर्याप्त न मानें।
सावधानी: आलोचना, कठोर सोच और अलग लगने वाले विचारों को तुरंत नकारने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: व्यवस्था के साथ रचनात्मकता जोड़ें और किसी खास व्यक्ति से एक उत्साहवर्धक बात कहें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 3 आपके तेज दिमाग और नेटवर्किंग क्षमता के अनुकूल है। बातचीत, बिक्री, यात्रा या डिजिटल संपर्क अवसर ला सकते हैं, लेकिन वास्तविक अवसर और आकर्षक भटकाव में फर्क रखें।
रिश्ते: सामाजिक ऊर्जा अधिक रहेगी और जुड़ाव आसान लगेगा। अपने इरादे स्पष्ट रखें ताकि सहज मित्रता गलत संकेत न दे।
सावधानी: अचानक खरीदारी, गॉसिप और क्षमता से अधिक योजनाएं स्वीकार करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी संवाद क्षमता को एक उपयोगी अवसर आगे बढ़ाने में लगाएं।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 3 रचनात्मकता, प्रस्तुति और सामाजिक संपर्क को बढ़ाता है। सौंदर्य, सेवा, क्लाइंट या संवाद से जुड़े काम लाभ दे सकते हैं, लेकिन आराम और लाइफस्टाइल खर्च नियंत्रित रखें।
रिश्ते: आज अपनापन व्यक्त करना आसान होगा। सुखद बातचीत या साथ में कुछ अच्छा करें, लेकिन हर चीज परफेक्ट होने की अपेक्षा न रखें।
सावधानी: दिखावे पर अधिक खर्च, भावनात्मक लिप्तता और लगातार प्रशंसा चाहने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: थोड़ी खुशी बनाएं, लेकिन आर्थिक और भावनात्मक संतुलन न बिगाड़ें।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 3 आपकी गहरी सोच को शब्दों में लाने को कहता है। शोध, लेखन, शिक्षण या किसी समझ को प्रस्तुत करने से पहचान मिल सकती है; अंतहीन तैयारी के पीछे न छिपें।
रिश्ते: सामान्य बातचीत से अधिक गहराई की जरूरत महसूस हो सकती है। दूसरों को बहुत हल्का समझकर पीछे हटने के बजाय एक सच्चा विचार साझा करें।
सावधानी: अत्यधिक विश्लेषण, कटाक्ष और उपयोगी विचार अपने तक सीमित रखने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण समझ को शब्द दें और सही व्यक्ति तक पहुंचाएं।

मूलांक 8

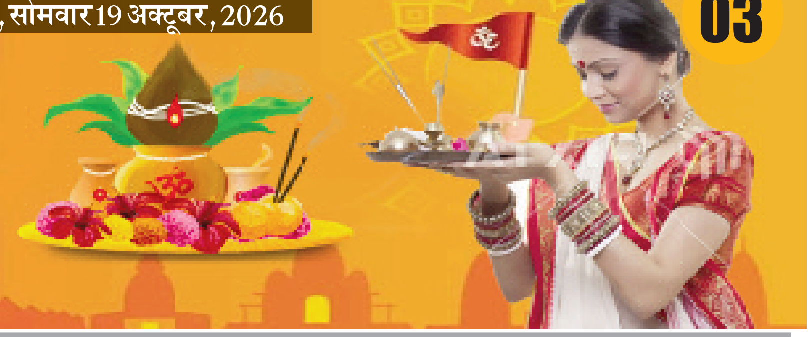
धन व करियर: दिन 3 आपकी गंभीर महत्वाकांक्षा को अधिक दिखाई देने और संवाद करने की ऊर्जा देता है। प्रस्तुति, बातचीत या व्यवसायिक चर्चा तब आगे बढ़ेगी जब अधिकार के साथ सहजता भी हो।
रिश्ते: हल्का और सकारात्मक रवैया तनाव कम कर सकता है। हर विषय तुरंत हल करना जरूरी नहीं; कभी-कभी गर्मजोशी और हास्य संवाद दोबारा खोल देते हैं।
सावधानी: कठोर भाषा, प्रतिष्ठा के लिए खर्च और हर रिश्ते को लेन-देन की तरह देखने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपने लक्ष्य स्पष्ट कहें और एक कठिन बातचीत का स्वर नरम करें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 3 आपकी जोशीली ऊर्जा को रचनात्मक दिशा देता है। अर्थपूर्ण काम पूरा करें, ज्ञान साझा करें या ऐसा कार्य सामने लाएं जो दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डाले; धन के निर्णय व्यावहारिक रखें।
रिश्ते: अभिव्यक्ति और क्षमा साथ काम करेंगे। दिल की बात कहें, लेकिन केवल भावनात्मक राहत के लिए पुराने विवाद दोबारा न खोलें।
सावधानी: नाटकीय प्रतिक्रिया, आवेग में उदारता और गुस्से में ऐसी बात कहने से बचें जिसे वापस न लिया जा सके।
दिन बेहतर बनाएं: अपने शब्दों से प्रेरणा दें, उपचार करें और एक महत्वपूर्ण विषय आगे बढ़ाएं।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions



साप्ताहिकी अंकशास्त्र

मीन राशि : सम्पूर्ण वैदिक ज्योतिषीय विश्लेषण



डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
07303855446

परिचय:

संयुक्त अंक 10 अंक ज्योतिष के सबसे रोचक और शक्तिशाली अंकों में से एक है। इसका संबंध सूर्य, नेतृत्व, महत्वाकांक्षा, अधिकार, पहचान, सफलता और संसार में अपनी एक सशक्त पहचान स्थापित करने की क्षमता से है। Cheiro की पुस्तक Book of Numbers में संयुक्त अंक 10 को "भाग्य का चक्र" (The Wheel of Fortune) कहा गया है। यह सम्मान, आत्मविश्वास, प्रतिष्ठा और जीवन की बदलती परिस्थितियों का प्रतीक है।

हालाँकि, अंक 10 ऐसा अंक है जिसे बहुत सावधानीपूर्वक समझने की आवश्यकता है। यह व्यक्ति को करियर में अत्यधिक प्रगति, पहचान, प्रसिद्धि, अधिकार और सफलता प्रदान कर सकता है, लेकिन इसके साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। कोई व्यक्ति अपने करियर में असाधारण ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है, जबकि अपने निजी जीवन में भावनात्मक असंतोष, संबंधों में कठिनाइयों या संतुलन की कमी का अनुभव कर सकता है।

यही बात संयुक्त अंक 10 को इतना रोचक बनाती है। इसमें अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन यह परिपक्वता, विनम्रता और संतुलन की भी माँग करता है। यह व्यक्ति को बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है, लेकिन व्यक्ति को यह सीखना होता है कि सफलता के साथ आने वाली शक्ति, जिम्मेदारियों और तीव्रता को किस प्रकार संभाला जाए।

संयुक्त अंक 10 का अर्थ:

संयुक्त अंक 10, अंक 1 और अंक 0 के संयोजन से बनता है। जब हम इन दोनों अंकों को जोड़ते हैं, तो हमें अंक 1 प्राप्त होता है।

10 = 1 + 0 = 1

अंक 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है। अंक ज्योतिष में सूर्य नेतृत्व, व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा, आत्मविश्वास, अधिकार, पहचान, स्वतंत्रता और जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा का प्रतीक है।

अंक 10 में अंक 1 की अंतर्निहित ऊर्जा होती है, लेकिन इसके संयुक्त अंक के अर्थ को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। यह केवल अंक 1 को लिखने का एक अन्य तरीका नहीं है। संयुक्त अंक का अपना विशिष्ट प्रतीकात्मक अर्थ होता है, और Cheiro अंक 10 को भाग्य के चक्र से जोड़ते हैं।

भाग्य का चक्र गति, परिवर्तन, अवसर, पहचान, उत्थान और पतन का प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार एक पहिया लगातार घूमता रहता है, उसी प्रकार जीवन की परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। कोई व्यक्ति एक सामान्य स्थिति से उठकर अत्यंत सफल स्थिति तक पहुँच सकता है, पहचान प्राप्त कर सकता है और अपनी एक सशक्त पहचान स्थापित कर सकता है। इसी के साथ सफलता जिम्मेदारियाँ भी लेकर आती है, और व्यक्ति को यह सीखना होता है कि परिस्थितियों के बदलने पर भी स्थिरता कैसे बनाए रखी जाए।

इसलिए अंक 10 महत्वाकांक्षा, उपलब्धि, प्रतिष्ठा और बदलते भाग्य के प्रतीकात्मक अर्थ को धारण करता है। यह अपार संभावनाओं वाला अंक है, लेकिन इसकी ऊर्जा किस प्रकार व्यक्त होती है, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

अंक 10 की सौर ऊर्जा:

अंक 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है और अंक 10 का मूलांक भी 1 होता है। इसलिए संयुक्त अंक 10 को समझने में सूर्य की ऊर्जा केंद्रीय भूमिका निभाती है।

सूर्य आत्मा, अधिकार, आत्मविश्वास, नेतृत्व, व्यक्तित्व, गरिमा, शक्ति और स्वतंत्र रूप से चमकने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य अपनी उपस्थिति स्थापित करने के लिए किसी अन्य स्रोत के प्रकाश पर निर्भर नहीं रहता। इसी प्रकार, अंक 1 से संबंधित सौर गुण व्यक्ति को अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित करने और संसार में अपना स्थान बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

जब हम अंक 10 का अध्ययन करते हैं, तो हमें इन गुणों की तीव्रता पर ध्यान देना चाहिए। मेरे अंक ज्योतिषीय दृष्टिकोण में, मैं अंक 10 को अंक 1 की ऊर्जा की अत्यधिक प्रबल अभिव्यक्ति के रूप में समझती हूँ। सूर्य के सकारात्मक गुण अत्यंत प्रमुख हो सकते हैं, लेकिन इसके नकारात्मक गुण भी तीव्र हो सकते हैं।

जब सौर ऊर्जा संतुलित होती है, तो यह आत्मविश्वास, साहस, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता प्रदान करती है। जब यही ऊर्जा अत्यधिक हो जाती है, तो आत्मविश्वास अति-आत्मविश्वास में, आत्मसम्मान अहंकार में, स्वतंत्रता भावनात्मक दूरी में और नेतृत्व दूसरों को नियंत्रित करने की इच्छा में बदल सकता है।

अंक 10 को समझने का यह मूलभूत सिद्धांत है। ऊर्जा तभी लाभदायक होती है, जब वह संतुलित हो और सही दिशा में उपयोग की जाए। जब कोई भी ऊर्जा अत्यधिक हो जाती है, तो वह कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती है।

सूर्य प्रकाश देता है और जीवन को बनाए रखने में सहायता करता है, लेकिन उसकी तीव्रता का सम्मान करना भी आवश्यक है। इसी प्रकार, अंक 10 की प्रबल सौर ऊर्जा असाधारण उपलब्धियों में सहायक हो सकती है, लेकिन इसके गुणों की अत्यधिक अभिव्यक्ति जीवन के अन्य क्षेत्रों में समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है।

अंक 10 असाधारण करियर सफलता क्यों दे सकता है?

अंक 10 से जुड़ी सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक व्यावसायिक उपलब्धि की इसकी संभावना है। अंक 1 के नेतृत्व संबंधी गुणों और भाग्य के चक्र के पहचान संबंधी प्रतीकात्मक अर्थ का संयोजन इसे उन लोगों के लिए एक रोचक अंक बनाता है, जो अपने करियर में ऊँचे पदों तक पहुँचने की आकांक्षा रखते हैं।

इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने की प्रबल इच्छा हो सकती है। वे केवल गुमनाम रहकर या अनिश्चित काल तक पर्दे के पीछे काम करके संतुष्ट नहीं होते। वे कुछ सार्थक उपलब्धि प्राप्त करना, अपनी प्रतिष्ठा बनाना और अपना एक विशिष्ट स्थान स्थापित करना चाहते हैं।

सूर्य का प्रभाव महत्वाकांक्षा, आत्मविश्वास और नेतृत्व करने की इच्छा प्रदान करता है। ये गुण व्यवसाय, प्रशासन, प्रबंधन, उद्यमिता, राजनीति, मनोरंजन और ऐसे अन्य क्षेत्रों में उपयोगी हो सकते हैं, जहाँ निर्णय लेने तथा सार्वजनिक पहचान का विशेष महत्त्व होता है।

अंक 10 पहल करने, स्वतंत्र निर्णय लेने और महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ने की क्षमता का प्रतीक हो सकता है। यह किसी स्थापित मार्ग का केवल अनुसरण करने के बजाय कुछ विशिष्ट और अलग बनाने की इच्छा को भी दर्शा सकता है।

अंक 10 का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू पहचान और प्रतिष्ठा है। Cheiro की भाग्य के चक्र संबंधी व्याख्या में सम्मान, प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास शामिल हैं। इस कारण उन व्यक्तियों का अध्ययन करते समय यह अंक विशेष रूप से रोचक हो जाता है, जो अपने व्यावसायिक क्षेत्र में व्यापक पहचान प्राप्त करते हैं।

अंक 10 से संबंधित व्यक्ति अपने पेशे में केवल एक सामान्य प्रतिभागी बनकर नहीं रहना चाहते। वे एक मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ, प्रभावशाली नेता, सफल उद्यमी या प्रमुख सार्वजनिक व्यक्तित्व बनना चाह सकते हैं।

हालाँकि, व्यावसायिक सफलता हमेशा चुनौतियों से मुक्त नहीं होती। भाग्य का चक्र यह भी याद दिलाता है कि परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। व्यक्ति को अनुकूलन करना, निरंतर सीखते रहना और सफलता प्राप्त करने के बाद आत्मसंतुष्ट होने से बचना चाहिए।

अंक 10 की वास्तविक शक्ति केवल ऊपर उठने की संभावना में नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, अनुशासन, ईमानदारी और सही निर्णय क्षमता के माध्यम से अपनी स्थिति बनाए रखने की योग्यता में भी निहित है।

नेतृत्व, आत्मविश्वास और अधिकार:

अंक 10 में नेतृत्व का प्रबल प्रतीकात्मक गुण होता है, क्योंकि इसका संबंध अंक 1 और सूर्य से है।

इस अंक से संबंधित व्यक्ति ऐसे पदों की ओर आकर्षित हो सकते हैं, जहाँ वे निर्णय ले सकें, जिम्मेदारियाँ संभाल सकें और दूसरों का मार्गदर्शन कर सकें। वे स्वतंत्रता को प्राथमिकता दे सकते हैं और ऐसे लोगों के अधीन काम करना कठिन पा सकते हैं, जिनके निर्णयों का वे सम्मान नहीं करते।

इसका सकारात्मक रूप एक आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नेता के रूप में सामने आ सकता है। ऐसा व्यक्ति कठिन निर्णय लेने का साहस रख सकता है, अपने निर्णयों के परिणामों की जिम्मेदारी स्वीकार कर सकता है और दूसरों को एक साझा उद्देश्य की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

हालाँकि, नेतृत्व का अर्थ केवल अधिकार रखना नहीं है। एक अच्छे नेता को दूसरों की बातें सुनना, सलाह स्वीकार करना और उनकी आवश्यकताओं को समझना भी आना चाहिए।

जब अंक 10 के सौर गुण संतुलित होते हैं, तो अधिकार के साथ विवेक भी जुड़ा होता है। लेकिन जब ये गुण अत्यधिक हो जाते हैं, तो व्यक्ति यह मानने लग सकता है कि उसका अपना निर्णय हमेशा सही होता है।

यहीं से अंक 10 का नकारात्मक पक्ष सामने आ सकता है। व्यक्ति असहमति के प्रति अधीर हो सकता है, आलोचना स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है या हर परिस्थिति पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के प्रति अत्यधिक चिंतित हो सकता है।

वही आत्मविश्वास, जो किसी व्यक्ति को व्यावसायिक रूप से सफल बनाता है, यदि उसे दूसरे लोगों के दृष्टिकोण समझने से रोकने लगे, तो संघर्ष का कारण भी बन सकता है।

अंक 10 का नकारात्मक पक्षः जब सौर ऊर्जा अत्यधिक हो जाती हैः

अंक ज्योतिषीय व्याख्या में प्रत्येक अंक की सकारात्मक और नकारात्मक अभिव्यक्तियाँ होती हैं। अंक 10 भी इसका अपवाद नहीं है।

चूँकि अंक 10 का मूलांक 1 है, इसलिए इसकी चुनौतीपूर्ण अभिव्यक्ति को सूर्य के प्रतीकात्मक स्वरूप के नकारात्मक पक्ष के माध्यम से समझा जा सकता है।

पहली चुनौती अहंकार है। व्यक्तित्व की मजबूत भावना लाभदायक होती है, जब वह व्यक्ति को अपनी क्षमताएँ पहचानने और अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने में सहायता करती है। लेकिन जब अहंकार अत्यधिक हो जाता है, तो व्यक्ति अपनी महत्ता को दूसरों की भावनाओं और आवश्यकताओं से ऊपर रखने लगता है।

दूसरी चुनौती अति-आत्मविश्वास है। व्यक्ति लगातार सफल निर्णय लेने का इतना अभ्यस्त हो सकता है कि वह जोखिमों को कम आँकने लगे या दूसरों की सलाह को अनदेखा करने लगे। कभी-कभी सफलता यह भ्रम पैदा कर देती है कि व्यक्ति हमेशा सही होता है।

तीसरी चुनौती अधीरता है। प्रबल महत्वाकांक्षा से प्रेरित व्यक्ति तुरंत परिणाम चाहता है। जब दूसरे लोग उसकी अपेक्षा से अलग गति से काम करते हैं या परिस्थितियाँ उसकी इच्छा के अनुसार विकसित नहीं होतीं, तो वह निराश और क्रोधित हो सकता है।

चौथी चुनौती नियंत्रण की आवश्यकता है। जो व्यक्ति व्यावसायिक जीवन में नेतृत्व करने का अभ्यस्त होता है, उसे पीछे हटने और दूसरों को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने देने में कठिनाई हो सकती है।

पाँचवीं चुनौती पहचान और प्रशंसा को अत्यधिक महत्त्व देना है। जब सार्वजनिक छवि और व्यावसायिक उपलब्धियाँ व्यक्ति की पहचान का केंद्रीय आधार बन जाती हैं, तो आलोचना उसे व्यक्तिगत अपमान जैसी लग सकती है। व्यक्ति ईमानदार संवाद की कीमत पर भी अपनी प्रतिष्ठा बचाने का प्रयास कर सकता है।

ये प्रवृत्तियाँ अनिवार्य नहीं हैं, लेकिन अंक की व्याख्या करते समय आत्म-जागरूकता के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

मूल शिक्षा यह है कि सूर्य के सकारात्मक गुणों को विवेक और संयम के साथ व्यक्त किया जाना चाहिए। आत्मविश्वास अहंकार नहीं बनना चाहिए, नेतृत्व दूसरों पर प्रभुत्व जमाने का साधन नहीं बनना चाहिए और महत्वाकांक्षा दूसरों की उपेक्षा करने का बहाना नहीं बननी चाहिए।

संयुक्त अंक 10 और व्यक्तिगत जीवनः

अंक 10 का एक महत्त्वपूर्ण पहलू व्यावसायिक सफलता और व्यक्तिगत सुख के बीच संभावित अंतर है।

अंक की मेरी व्याख्या में, कोई व्यक्ति अपने करियर में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता है, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों में चुनौतियों का सामना कर सकता है। वह बाहरी संसार में अत्यधिक सम्मान प्राप्त कर सकता है, फिर भी निजी जीवन में समान स्तर का सामंजस्य बनाए रखने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

प्रतीकात्मक रूप से ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वे गुण जो व्यावसायिक उन्नति में सहायक होते हैं, आवश्यक नहीं कि वे अंतरंग संबंधों को बनाए रखने के लिए भी उतने ही उपयोगी हों।

व्यावसायिक जीवन में अक्सर निर्णायक क्षमता, महत्वाकांक्षा, स्वतंत्रता, प्रतिस्पर्धा और किसी लक्ष्य पर गहन ध्यान देने को महत्त्व दिया जाता है। इसके विपरीत, व्यक्तिगत संबंधों में धैर्य, भावनात्मक संवेदनशीलता, समझौता, संवाद और नियंत्रण साझा करने की इच्छा आवश्यक होती है।

कोई व्यक्ति व्यवसाय चलाने में अत्यंत कुशल हो सकता है, लेकिन घर में मतभेदों को संभालने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। वह एक बड़े संगठन का नेतृत्व कर सकता है, लेकिन यह स्वीकार करने में संघर्ष कर सकता है कि उसके जीवनसाथी का भी अपना समान रूप से वैध दृष्टिकोण है। वह सार्वजनिक रूप से सम्मान प्राप्त करना जानता हो सकता है, लेकिन निजी जीवन में अपनी भावनात्मक कमजोरियों को व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

समस्या महत्वाकांक्षा स्वयं नहीं है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब महत्वाकांक्षा इतनी प्रभावशाली हो जाती है कि अन्य जिम्मेदारियों को पर्याप्त समय और ध्यान नहीं मिल पाता।

अहंकार और संबंधः

अंक 10 के सौर प्रभाव के कारण अहंकार को समझना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

व्यक्तित्व की प्रबल भावना रखने वाला व्यक्ति सम्मान और सराहना प्राप्त करना चाह सकता है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन जब सम्मान की आवश्यकता अत्यधिक हो जाती है, तो सामान्य मतभेद भी अपमान जैसे महसूस हो सकते हैं।

अपनी गलती स्वीकार करने के बजाय व्यक्ति अपनी स्थिति का बचाव करने लग सकता है। समय के साथ ऐसा व्यवहार भावनात्मक दूरी पैदा कर सकता है।

एक स्वस्थ संबंध में दोनों व्यक्तियों को यह महसूस होना चाहिए कि उनकी बात सुनी जाती है और उनका सम्मान किया जाता है। व्यावसायिक वातावरण में नेतृत्व करना अपने आप में किसी संबंध के भीतर नेतृत्व करने का अधिकार नहीं देता।

कभी-कभी किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति यह पहचानने में होती है कि उसे कब पीछे हटना चाहिए, कब ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और कब दूसरे व्यक्ति को समान रूप से अपनी बात रखने का अवसर देना चाहिए।

करियर बनाम व्यक्तिगत जीवनः

अंक 10 की व्याख्या से जुड़ी एक अन्य चुनौती व्यावसायिक उपलब्धियों को अत्यधिक प्राथमिकता देने की संभावना है।

व्यक्ति बहुत मेहनत कर सकता है, अवसरों का पीछा कर सकता है, प्रतिष्ठा बना सकता है और लगातार अधिक सफलता प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है। इन प्रयासों से प्रभावशाली परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन वे व्यक्ति का समय और भावनात्मक ऊर्जा भी बहुत अधिक खर्च कर सकते हैं।

व्यक्ति यह मान सकता है कि आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना या ऊँची सामाजिक स्थिति प्राप्त करना ही उसकी सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। लेकिन व्यक्तिगत संबंधों में समय देना, स्नेह, समझ और संवाद भी आवश्यक हैं।

एक सफल करियर भावनात्मक निकटता की कमी की स्वतः भरपाई नहीं कर सकता।

स्वतंत्रता और भावनात्मक दूरीः

अंक 1 का संबंध स्वतंत्रता से है, और स्वतंत्रता एक बड़ी शक्ति हो सकती है। यह व्यक्ति को निर्णय लेने, जिम्मेदारी उठाने और अपनी क्षमताओं पर विश्वास विकसित करने में सहायता करती है।

लेकिन अत्यधिक स्वतंत्रता यह धारणा पैदा कर सकती है कि व्यक्ति को सब कुछ अकेले ही संभालना चाहिए। वह सहायता माँगने, अपनी भावनात्मक कमजोरियाँ स्वीकार करने या अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं को पहचानने से हिचकिचा सकता है।

संबंधों में इससे दूरी पैदा हो सकती है। जीवनसाथी जिम्मेदारियाँ साझा करना और सहयोग देना चाह सकता है, लेकिन व्यक्ति को नियंत्रण छोड़ने में कठिनाई हो सकती है।

यहाँ शिक्षा यह है कि सहयोग स्वीकार करने से व्यक्ति कमजोर नहीं होता। वास्तव में, दूसरों पर विश्वास करना, मिलकर काम करना और जिम्मेदारियाँ साझा करना भी शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण रूप है।

संतुलन का महत्त्वः

अंक 10 से संबंधित व्यक्तिगत जीवन की चुनौतियों को दुखी जीवन की पूर्वनिर्धारित सजा के रूप में नहीं समझना चाहिए। इन्हें ऐसे क्षेत्र के रूप में देखना चाहिए, जिन पर सचेत रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

कोई व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा बनाए रखते हुए अधिक धैर्यवान बन सकता है। वह अधिकार रखते हुए भी विनम्र रह सकता है। वह व्यावसायिक पहचान प्राप्त करते हुए अपने संबंधों को भी समान महत्त्व दे सकता है।

सौर ऊर्जा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति दूसरों पर प्रभुत्व जमाना नहीं है। यह दिशा, ऊष्मा, स्थिरता और प्रेरणा प्रदान करने की क्षमता है।

जब अंक 10 के गुणों को रचनात्मक रूप से व्यक्त किया जाता है, तो व्यक्ति अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण लोगों की उपेक्षा किए बिना सफलता की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

अंक 10 की कर्म संबंधी व्याख्याः

अंक 10 को कभी-कभी कर्म के नवीनीकरण, पुनर्जन्म और एक नए चक्र की शुरुआत के अंक के रूप में समझा जाता है।

इस व्याख्या में यह अंक आगे बढ़ने, एक नई पहचान स्थापित करने और अपनी क्षमताओं का अधिक सचेत रूप से उपयोग करने के अवसर का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतीकात्मक रूप से शून्य को संभावनाओं के क्षेत्र के रूप में समझा जा सकता है, जबकि एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, उसकी स्वतंत्रता और कार्य करने की क्षमता के उदय का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए अंक 10 से जुड़ी कर्म संबंधी शिक्षा को शक्ति के जिम्मेदार उपयोग के माध्यम से समझा जा सकता है।

जिस व्यक्ति को अधिकार प्राप्त होता है, उसे उसका निष्पक्ष उपयोग करना सीखना चाहिए। जिसे पहचान प्राप्त होती है, उसे विनम्र और जमीन से जुड़ा रहना सीखना चाहिए। जो व्यक्ति सफल हो जाता है, उसे यह समझना चाहिए कि सफलता उसे दूसरों से श्रेष्ठ नहीं बना देती।

यह अंक अपने निर्णयों के परिणामों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है। प्रत्येक कार्य दूसरे लोगों को प्रभावित करता है, और व्यावसायिक उपलब्धियों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

आध्यात्मिक दृष्टि से इसकी शिक्षा है कि आत्मविश्वास के साथ विनम्रता और महत्वाकांक्षा के साथ करुणा भी विकसित की जाए।

इस प्रकार अंक 10 को अधिक जागरूकता के साथ फिर से शुरुआत करने के अवसर के रूप में देखा जा सकता है। व्यक्ति को वास्तविक नेतृत्व और नियंत्रण करने की इच्छा के बीच, आत्मसम्मान और अहंकार के बीच तथा उपलब्धि और निरंतर प्रशंसा की आवश्यकता के बीच अंतर पहचानने के लिए प्रेरित किया जाता है।

इस कर्म संबंधी व्याख्या का सबसे सार्थक पक्ष अंक से डरना नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा, अधिकार और अवसरों का उपयोग अधिक जिम्मेदारी के साथ करने के लिए तैयार होना है।

भाग्य का चक्रः उत्थान, पतन और पुनः स्वयं को स्थापित करनाः

संयुक्त अंक 10 के लिए Cheiro द्वारा प्रयुक्त "भाग्य का चक्र" विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

एक पहिया लगातार घूमता रहता है। उसकी स्थिति बदलती रहती है और कोई भी बिंदु हमेशा के लिए सबसे ऊपर नहीं रहता।

प्रतीकात्मक रूप से यह परिस्थितियों की बदलती प्रकृति को दर्शाता है। कोई व्यक्ति तेजी से प्रगति कर सकता है, पहचान प्राप्त कर सकता है, अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना कर सकता है और बाद में नए अवसर खोज सकता है।

इसलिए अंक 10 को इस बात की याद दिलाने वाले अंक के रूप में समझा जा सकता है कि सफलता के लिए केवल महत्वाकांक्षा पर्याप्त नहीं है। इसके लिए परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता भी आवश्यक है।

सफल होने के बाद भी व्यक्ति को सीखते रहना चाहिए। उसे बदलती परिस्थितियों के प्रति खुला रहना चाहिए और यह मानने से बचना चाहिए कि पिछली उपलब्धियाँ भविष्य की सफलता की गारंटी हैं।

इसी प्रकार, किसी असफलता को यात्रा का अंत मानना भी आवश्यक नहीं है। यह अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने, नए कौशल विकसित करने और विकास के एक नए चरण की शुरुआत करने का अवसर हो सकता है।

भाग्य का चक्र यह भी याद दिलाता है कि ईमानदारी के माध्यम से प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए। किसी व्यक्ति के कार्य उसकी प्रतिष्ठा को मजबूत कर सकते हैं, लेकिन लापरवाह निर्णय और अधिकार का दुरुपयोग उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

इस अंक की गहरी शिक्षा यह है कि बदलती परिस्थितियों के बीच संतुलित रहा जाए। सफलता अहंकार उत्पन्न न करे और असफलताएँ आत्मविश्वास को नष्ट न करें।

अंक 10 की शक्तियाँ और सकारात्मक गुणः

अंक 10 से संबंधित प्रमुख सकारात्मक गुणों में महत्वाकांक्षा, नेतृत्व, दृढ़ संकल्प, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण प्राप्त करने की इच्छा शामिल हैं।

ऐसे व्यक्ति जिम्मेदारी वाले पदों की ओर आकर्षित हो सकते हैं और अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करने की प्रबल इच्छा रख सकते हैं। उन्हें पहल करना, नए विचार विकसित करना और महत्त्वाकांक्षी उद्देश्यों की दिशा में कार्य करना पसंद हो सकता है।

इस अंक के प्रतीकात्मक अर्थ में पहचान प्राप्त करने और व्यावसायिक प्रतिष्ठा बनाने की क्षमता भी शामिल है। इसका उपयोग ऐसे करियर से जुड़ी विशेषताओं को समझने के लिए किया जा सकता है, जिनमें सार्वजनिक पहचान, अधिकार और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का विशेष महत्त्व होता है।

एक अन्य सकारात्मक गुण स्वयं को नए रूप में स्थापित करने की क्षमता है। भाग्य का चक्र परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है, और जब व्यक्ति लचीला बना रहता है तथा सीखने के लिए तैयार होता है, तो परिवर्तन विकास के अवसर उत्पन्न कर सकता है।

जब इन गुणों के साथ विनम्रता और अनुशासन भी जुड़े होते हैं, तो अंक 10 का प्रतीकात्मक अर्थ जिम्मेदारी के साथ नेतृत्व करना बन जाता है।

अंक 10 की कमजोरियाँ और नकारात्मक गुणः

अंक 10 के चुनौतीपूर्ण पक्ष में अत्यधिक अहंकार, अधीरता, हठ, अति-आत्मविश्वास, बेचैनी और व्यक्तिगत आवश्यकताओं की तुलना में व्यावसायिक लक्ष्यों को अधिक प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति शामिल है।

कोई व्यक्ति सफलता प्राप्त करने में इतना अधिक केंद्रित हो सकता है कि संबंधों को बनाए रखने के महत्त्व को अनदेखा करने लगे। वह दूसरों से अपनी महत्वाकांक्षाओं के अनुसार स्वयं को ढालने की अपेक्षा कर सकता है, लेकिन दूसरे लोगों की परिस्थितियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे सकता।

जब उसके अधिकार पर प्रश्न उठाए जाते हैं या परिस्थितियाँ उसकी योजनाओं के अनुसार आगे नहीं बढ़तीं, तब भी उसे असहजता हो सकती है।

एक अन्य चुनौती अपनी व्यक्तिगत योग्यता को व्यावसायिक उपलब्धियों से जोड़कर देखना है। यदि पहचान और प्रशंसा ही सफलता को मापने का मुख्य आधार बन जाएँ, तो महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति के लिए संतुष्ट महसूस करना कठिन हो सकता है।

यह शिक्षा आवश्यक है कि उपलब्धियाँ सार्थक जीवन का केवल एक हिस्सा हैं। भावनात्मक संतुष्टि, स्वास्थ्य, संबंध, ईमानदारी और आंतरिक स्थिरता भी समान रूप से ध्यान देने योग्य हैं।

केस स्टडीः रेखाः

रेखा भारतीय सिनेमा की सबसे अधिक पहचानी जाने वाली अभिनेत्रियों में से एक हैं। उनका जन्म 10 अक्टूबर 1954 को हुआ था। उनकी जन्मतिथि संयुक्त अंक 10 के प्रतीकात्मक अर्थ का अध्ययन करने के लिए एक रोचक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

जन्मतिथिः 10 अक्टूबर 1954
जन्मांकः 10/1
भाग्यांकः 21/3
व्यावसायिक नामः Rekha = 15/6
पूरा नामः Rekha Ganesan = 38/2

जन्मांक 10/1

रेखा का जन्मांक 10 है, जिसका मूलांक 1 होता है।

अंक 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है और व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास तथा अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करने की इच्छा से जुड़ा है।

फिल्म उद्योग में रेखा का लंबा करियर और अपनी सार्वजनिक छवि को नए रूप में प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता इन सौर गुणों पर चर्चा करने के लिए एक रोचक उदाहरण प्रदान करती है। वह कई दशकों से भारतीय सिनेमा की प्रमुख हस्ती बनी हुई हैं। यह उनकी व्यावसायिक दीर्घायु और विशिष्ट कलात्मक पहचान को दर्शाता है।

अंक ज्योतिषीय दृष्टिकोण से उनके करियर का अध्ययन अंक 10 के प्रतीकात्मक अर्थों के माध्यम से किया जा सकता है। इनमें पहचान, सार्वजनिक व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा और बदलती परिस्थितियों के बीच प्रासंगिक बने रहने की क्षमता शामिल हैं।

उनकी व्यावसायिक यात्रा भाग्य के चक्र को समझने के लिए भी एक उपयोगी उदाहरण प्रस्तुत करती है। किसी व्यक्ति के करियर में पहचान के विभिन्न चरण, स्वयं को नए रूप में स्थापित करना और समय-समय पर फिर से सार्वजनिक ध्यान प्राप्त करना शामिल हो सकता है।

यह केस स्टडी दर्शाती है कि अंक 10 के प्रतीकात्मक अर्थों का उपयोग व्यावसायिक पहचान और सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा पर चर्चा करने के लिए किस प्रकार किया जा सकता है।

भाग्यांक 21/3

रेखा की पूरी जन्मतिथि के अंकों का योग 21 होता है, जिसका मूलांक 3 है।

1 + 0 + 1 + 0 + 1 + 9 + 5 + 4 = 21

2 + 1 = 3

अंक 3 का संबंध गुरु से है और यहाँ प्रयुक्त अंक ज्योतिषीय प्रणाली में यह रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, सीखने और संवाद का प्रतिनिधित्व करता है।

अभिनय ऐसा पेशा है, जिसमें अभिव्यक्ति की क्षमता, रचनात्मकता, भावनाओं को समझने और प्रस्तुत करने की योग्यता तथा संवाद का विशेष महत्त्व होता है। रेखा का करियर इन गुणों का अंक 3 के प्रतीकात्मक अर्थों के संदर्भ में अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।

इस प्रकार जन्मांक 10/1 और भाग्यांक 21/3 के संयोजन को व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सार्वजनिक पहचान के मेल के रूप में समझा जा सकता है।

यह उनकी व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ अंकों की एक प्रतीकात्मक व्याख्या है, न कि इस बात का प्रमाण कि इन अंकों ने उनकी सफलता उत्पन्न की।

बार-बार आने वाला अंक 10

रेखा की जन्मतिथि में अंक 10 दो बार आता हैः 10 अक्टूबर।

जन्मतिथि और जन्ममाह में अंक 10 का यह संयोजन आपको जीवन में प्रसिद्धि और सेलिब्रिटी जैसी पहचान प्रदान करता है। इस अंक ज्योतिषीय व्याख्या के अंतर्गत, इसकी पुनरावृत्ति 10/1 से संबंधित विषयों की ओर ध्यान आकर्षित करती है। इनमें व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा, पहचान और सार्वजनिक जीवन में अपनी छवि बनाए रखने की जिम्मेदारियाँ शामिल हैं।

रेखा की व्यावसायिक यात्रा अत्यधिक प्रतिस्पर्धा वाले उद्योग में लंबे समय तक पहचान बनाए रखने और स्वयं को नए रूप में स्थापित करने की संभावना को दर्शाती है।

इसी के साथ, सार्वजनिक सफलता को स्वतः व्यक्तिगत सुख के बराबर नहीं माना जाना चाहिए। कोई व्यक्ति व्यावसायिक जीवन में बहुत अधिक पहचान प्राप्त कर सकता है, जबकि उसकी निजी परिस्थितियाँ जटिल बनी रह सकती हैं।

यह अंतर अंक 10 की व्याख्या का केंद्रीय विषय है। सफल करियर और संतुष्टिदायक व्यक्तिगत जीवन के लिए अलग-अलग प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता होती है। एक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने से दूसरे क्षेत्र में सामंजस्य की गारंटी नहीं मिलती।

इस केस स्टडी में एक अन्य महत्त्वपूर्ण संकेत यह है कि रेखा का भाग्यांक 3 और नामांक 6 है। अंक ज्योतिषीय प्रणाली में ये दोनों अंक परस्पर विरोधी माने जाते हैं। ये भी व्यावसायिक सफलता और व्यक्तिगत जीवन में चुनौतियों के संभावित संकेत माने जा सकते हैं, जो उनकी केस स्टडी में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

इसलिए रेखा के जीवन को सार्वजनिक पहचान और निजी संतुष्टि के बीच अंतर समझने के लिए एक केस स्टडी के रूप में उपयोग किया जा सकता है। हालाँकि, उनकी निजी परिस्थितियों को इस बात का प्रमाण नहीं मानना चाहिए कि अंक 10 ने संबंधों में कठिनाइयाँ उत्पन्न कीं या कोई विशेष कर्मफल पहले से निश्चित था। जैसा कि ऊपर बताया गया है, व्यक्तिगत जीवन में चुनौतियों के पीछे कई अन्य संकेत भी हो सकते हैं।

संयुक्त अंक 10 का अंतिम विश्लेषण

संयुक्त अंक 10 अध्ययन के लिए एक शक्तिशाली और रोचक अंक है, क्योंकि यह अंक 1 के सौर गुणों को भाग्य के चक्र के पहचान, परिवर्तन और जिम्मेदारी संबंधी प्रतीकात्मक अर्थों के साथ जोड़ता है।

इसकी व्याख्या महत्वाकांक्षा, नेतृत्व, आत्मविश्वास, व्यावसायिक पहचान और एक विशिष्ट व्यक्तित्व स्थापित करने की इच्छा के अंक के रूप में की जा सकती है। यह विशेष रूप से उन करियरों का अध्ययन करते समय महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जिनमें अधिकार, उद्यमिता, सार्वजनिक पहचान या मजबूत व्यावसायिक प्रतिष्ठा स्थापित करने की आवश्यकता होती है।

हालाँकि, इसके चुनौतीपूर्ण पक्ष को भी समझना आवश्यक है। जब सूर्य के गुण अत्यधिक हो जाते हैं, तो आत्मविश्वास अहंकार में, स्वतंत्रता भावनात्मक दूरी में और महत्वाकांक्षा व्यक्तिगत संबंधों की उपेक्षा करने में बदल सकती है।

मेरी व्याख्या में, अंक 10 ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जो व्यावसायिक जीवन में असाधारण सफलता प्राप्त करता है, लेकिन जिसे अपने व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए सचेत प्रयास करने की आवश्यकता होती है। यह अंक याद दिलाता है कि करियर की उपलब्धियाँ और भावनात्मक संतुष्टि एक ही चीज नहीं हैं।

कोई व्यक्ति बाहरी संसार में शक्तिशाली बन सकता है, लेकिन वास्तविक सफलता के लिए सार्थक संबंधों को बनाए रखने, अलग-अलग विचारों को स्वीकार करने, जिम्मेदारियाँ साझा करने और विनम्र बने रहने की क्षमता भी आवश्यक है।

अंक 10 की कर्म संबंधी शिक्षा यह है कि शक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, महत्वाकांक्षा को जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ाया जाए और यह समझा जाए कि पहचान तथा प्रतिष्ठा के साथ अवसरों के अलावा दायित्व भी आते हैं।

भाग्य का चक्र हमें याद दिलाता है कि परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। इसलिए व्यक्ति को केवल ऊपर उठने की क्षमता ही नहीं, बल्कि सफलता प्राप्त होने पर जमीन से जुड़े रहने की बुद्धिमत्ता और जीवन की दिशा बदलने पर परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने का धैर्य भी विकसित करना चाहिए।

संयुक्त अंक 10 का अंतिम संदेश सरल हैः महत्वाकांक्षा एक शक्ति है, नेतृत्व एक जिम्मेदारी है और सफलता तब सबसे अधिक सार्थक होती है, जब उसके साथ संतुलन भी बना रहे।

व्यक्ति को केवल सूर्य की तरह चमकने की आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। उसे उस प्रकाश का रचनात्मक उपयोग करना भी सीखना चाहिए, ताकि अहंकार करुणा पर हावी न हो, महत्वाकांक्षा संबंधों को पीछे न छोड़ दे और व्यावसायिक उपलब्धियाँ जीवन के गहरे अर्थ को ढक न दें।

डॉ. एन. पूजाप्रसून



2100 कन्याओं का पूजन, चरण धोकर नौ कन्याओं की आराधना; गयाजी में आस्था का अद्भुत संगम



गयाजी। शहर के ऐतिहासिक गांधी मैदान में 2100 कन्याओं के सामूहिक पूजन का भव्य आयोजन किया गया। कन्याओं के चरण धोकर पूजन और नौ कन्याओं की आराधना ने मां आदिशक्ति के प्रति श्रद्धा, नारी सम्मान और सनातन संस्कृति का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नागालैंड के राज्यपाल नंदकिशोर यादव ने किया। इस अवसर पर बिहार विधानसभा अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार तथा अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख राजकुमार मटाले भी शामिल हुए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल नंदकिशोर यादव ने कहा कि उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया है, लेकिन इतने बड़े स्तर पर कन्या पूजन का आयोजन पहली बार गयाजी में देखा। मोक्ष की भूमि और मां आदिशक्ति मंगलागौरी की धरती पर आयोजित इस कार्यक्रम में शामिल होकर वे स्वयं को धन्य महसूस कर रहे हैं।

आयोजन की सफलता में सेवा भारती के अध्यक्ष प्रमोद भदानी तथा संयोजक विक्की बरनवाल, अनिल कुमार और देवोत्तम केसरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विजयादशमी उत्सव में पंच परिवर्तन से राष्ट्र निर्माण का आह्वान



हरियाणा हिसार// राजेश सलूजा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से केशव नगर में विजयादशमी उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नल अंकित तथा मुख्य वक्ता जिला कार्यवाह सतीश जी रहे। इस अवसर पर सह जिला संघचालक मोहित जी और केशव नगर के संघचालक राहुल जी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

उत्सव के अवसर पर स्वयंसेवकों द्वारा अनुशासित एवं सुव्यवस्थित पथ संचलन निकाला गया। कदमताल करते हुए स्वयंसेवकों ने अनुशासन, एकजुटता और सामूहिक समन्वय का परिचय दिया। पथ संचलन के दौरान क्षेत्र में उत्सव का माहौल रहा।

मुख्य वक्ता सतीश जी ने संघ के शताब्दी वर्ष के संदर्भ में सेवा कार्यों और राष्ट्र निर्माण में समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कोविड महामारी के दौरान किए गए सेवा कार्यों तथा भारत की वैज्ञानिक एवं अंतरिक्ष क्षेत्र की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए विकसित भारत के निर्माण में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता को आवश्यक बताया।

मुख्य अतिथि कर्नल अंकित ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की शुरुआत स्वयं से होती है। स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, सड़कों एवं सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखना, सोशल मीडिया का जिम्मेदारी से उपयोग करना और बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

कार्यक्रम में पंच परिवर्तन के अंतर्गत सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी एवं स्वबोध तथा नागरिक कर्तव्यों के पालन पर जोर दिया गया। महाकुंभ में 'एक थैला, एक थाली' जैसे अभियानों का उल्लेख करते हुए पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार जीवनशैली अपनाने का संदेश भी दिया गया।

वक्ताओं ने कहा कि संघ के शताब्दी वर्ष में प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण और दैनिक जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का संकल्प ले। समाज में समरसता, परिवारों में संस्कार और नागरिकों में कर्तव्यबोध ही सशक्त, संस्कारित एवं विकसित भारत की आधारशिला हैं।

हरियाणा में भाजपा के 12 साल बेमिसाल, 'बिना पर्ची-बिना खर्ची' से अंत्योदय तक बदली प्रदेश की तस्वीर

'बिना पर्ची-बिना खर्ची' से मेरिट आधारित भर्ती तक, मनोहर लाल और नायब सैनी के नेतृत्व में बदली प्रदेश की तस्वीर

हरियाणा हिसार//राजेश सलूजा

भाजपा सरकार के हरियाणा में गौरवशाली एवं ऐतिहासिक 12 वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा जिला सह मीडिया प्रभारी हांसी एवं बरवाला विधानसभा मीडिया प्रभारी कमल हंदूजा ने कहा कि वर्ष 2014 से प्रदेश में विकास, पारदर्शिता, सुशासन और जनकल्याण की राजनीति को नई दिशा मिली है। पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान केंद्रीय कैबिनेट मंत्री मनोहर लाल ने वर्ष 2014 में मुख्यमंत्री का दायित्व संभालने के बाद प्रदेश की राजनीति में व्यवस्था परिवर्तन की मजबूत नींव रखी। इसके बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जनकल्याण और अंत्योदय की भावना के साथ इस विकास यात्रा को आगे बढ़ाया।

कमल हंदूजा ने कहा कि मनोहर लाल के नेतृत्व में हरियाणा में सरकारी नौकरियों की भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने पर विशेष जोर दिया गया। पहले युवाओं में यह धारणा थी कि सरकारी नौकरी पाने के लिए राजनीतिक पहुंच या पैसे की जरूरत पड़ती है, लेकिन भाजपा सरकार ने 'बिना पर्ची-बिना खर्ची' और योग्यता आधारित भर्ती व्यवस्था को प्राथमिकता दी। इससे युवाओं में मेहनत और पढ़ाई के प्रति विश्वास मजबूत हुआ तथा उन्हें अपनी योग्यता के दम पर आगे बढ़ने का अवसर मिला।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत ढांचे के विकास को भी प्राथमिकता दी। प्रदेश के जिलों में मेडिकल कॉलेजों के विस्तार की दिशा में कदम उठाए गए तथा राष्ट्रीय राजमार्गों और सड़क संपर्क को मजबूत करने पर जोर दिया गया। इन प्रयासों से हरियाणा में विकास की नई संभावनाएं खुलीं और आम नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में काम हुआ।

कमल हंदूजा ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में भी हरियाणा सरकार ने बुजुर्गों, दिव्यांगजनों और विधवा महिलाओं के लिए पेंशन योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान करने पर विशेष ध्यान दिया है। सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों का उद्देश्य समाज के जरूरतमंद वर्गों को आर्थिक संबल देना और उनके जीवन को सुरक्षित बनाना है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेश की बागडोर संभालने के बाद अंत्योदय की भावना को केंद्र में रखकर काम किया। सरकार का लक्ष्य है कि अंतिम पंक्ति में खड़े पात्र व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचे और कोई भी जरूरतमंद परिवार कल्याणकारी योजनाओं से वंचित न रहे।

कमल हंदूजा ने किसान हितों का उल्लेख करते हुए कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा किसानों की सभी 24 फसलों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदने का निर्णय किसान कल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे किसानों को अपनी फसलों के उचित मूल्य और आर्थिक सुरक्षा को लेकर भरोसा मिलता है। किसान प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और उनके हितों की रक्षा करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है।

उन्होंने महिला सशक्तीकरण के लिए शुरू की गई लाडो लक्ष्मी योजना को भी महत्वपूर्ण पहल बताया। कमल हंदूजा ने कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने महिलाओं को आर्थिक सहायता देने का संकल्प व्यक्त किया था। सरकार बनने के बाद योजना के लिए बजट का प्रावधान कर इसे लागू करने की दिशा में कदम उठाया गया। अब योजना की पात्रता के लिए वार्षिक आय सीमा बढ़ाकर 1.80 लाख रुपये किए जाने से अधिक पात्र महिलाओं और बहनों को लाभ मिलने की संभावना बढ़ी है। यह कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और परिवार में उनकी भूमिका को सशक्त करने की दिशा में अहम है।

कमल हंदूजा ने कहा कि मनोहर लाल के नेतृत्व में शुरू हुई पारदर्शी शासन व्यवस्था और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में आगे बढ़ रही जनकल्याणकारी नीतियां हरियाणा के विकास को नई गति दे रही हैं। भाजपा सरकार के 12 वर्ष प्रदेश में सुशासन, जनसेवा, किसान कल्याण, युवा सशक्तीकरण और महिला उत्थान के संकल्प को दोहराने का अवसर हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि भाजपा सरकार इसी तरह जनता की आकांक्षाओं पर खरा उतरते हुए हरियाणा को विकास के नए शिखर पर पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य करती रहेगी।



दुर्गम हिमालय में भारतीय सेना के ईवी राइडर्स का साहसिक अभियान

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र हल्द्वानी

माणा में वीर शहीदों को दी श्रद्धांजलि — पंच प्रयागों से होते हुए देश के प्रथम गांव पहुंचे सेना के अधिकारी व जवान, हल्द्वानी मिलिट्री स्टेशन में गढ़वाल - शिवालिक चरण का समापन

- 1. अभियानः स्टैलियंस पैन-हिमालयन ईवी राइडिंग एक्सपीडिशन (SPHERE) — भारतीय सेना का इलेक्ट्रिक वाहन राइडिंग अभियान

- 2. उपलब्धिः गढ़वाल हिमालय के दुर्गम पर्वतीय मार्गों को पार कर देश के प्रथम गांव माणा तक पहुंचे सेना के अधिकारी व जवान

- 3. श्रद्धांजलिः माणा स्थित युद्ध स्मारक पर देश की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों को नमन किया

- 4. नेतृत्वः मेजर जनरल विशाल चौहान के नेतृत्व में कर्नल अरविंदर सिंह चहल, लेफ्टिनेंट कर्नल महेंद्र सिंह, एसएम, मेजर शिवम सिंह सहित आर्मी सर्विस कोर (एएससी) के अधिकारी एवं जवान शामिल रहे

- 5. समापनः अभियान का गढ़वाल-शिवालिक चरण कुमाऊं के प्रवेश द्वार हल्द्वानी स्थित मिलिट्री स्टेशन में संपन्न हुआ

- 6. विशेष अवसरः आर्मी सर्विस कोर (एएससी) के 266वें स्थापना दिवस और 12वें एएससी रीयूनियन के उपलक्ष्य में आयोजित

पंच प्रयागों से होकर गुजरा अभियान उत्तराखंड की चुनौतीपूर्ण भौगोलिक परिस्थितियों के बीच अभियान दल ने राज्य के पवित्र पंच प्रयागों से होकर यात्रा पूरी की। इस दौरान टीम को दुर्गम पहाड़ी रास्तों, ऊंचाई वाले क्षेत्रों और कठिन पर्वतीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

इन चुनौतियों के बीच इलेक्ट्रिक वाहनों का संचालन कर अभियान ने यह प्रदर्शित किया कि भविष्य में सैन्य परिवहन व्यवस्था को अधिक पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में ईवी तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

उद्देश्य — हरित तकनीक और टिकाऊ रसद इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य सैन्य परिवहन में इलेक्ट्रिक वाहनों की उपयोगिता और उनकी परिचालन क्षमता को प्रदर्शित करना है।

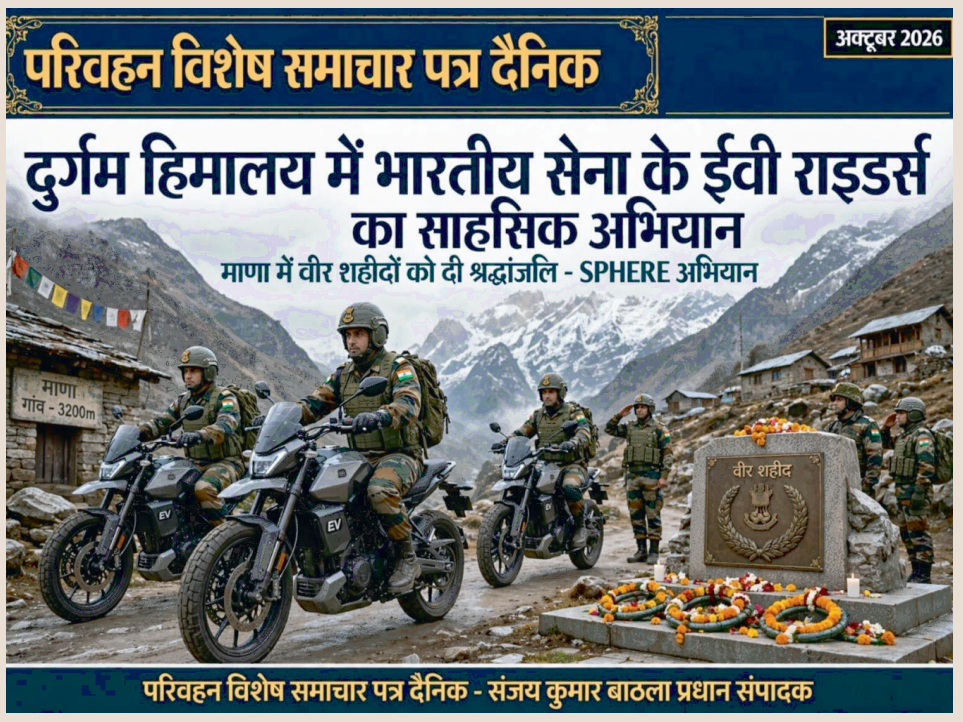
साथ ही, पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता कम करने, कार्बन उत्सर्जन घटाने और सैन्य रसद व्यवस्था को अधिक टिकाऊ एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाने की संभावनाओं को सामने लाना भी अभियान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

आत्मनिर्भरता और हरित भविष्य की ओर भारतीय सेना दुर्गम हिमालयी क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक वाहनों के संचालन की यह पहल भारतीय सेना की तकनीकी क्षमता, नवाचार और बदलती परिचालन आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को विकसित करने के प्रयासों को रेखांकित करती है।

पर्वतीय क्षेत्रों में कठिन परिस्थितियों के बीच इस प्रकार का अभियान भविष्य में सैन्य परिवहन के लिए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की उपयोगिता को समझने में भी सहायक हो सकता है।

निष्कर्ष यह अभियान केवल एक साहसिक यात्रा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने देशभक्ति, शहीदों के प्रति सम्मान, आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया।

तकनीकी नवाचार के साथ आगे बढ़ते हुए भारतीय सेना ने यह संकेत दिया कि राष्ट्रीय सुरक्षा की जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ-साथ टिकाऊ और हरित भविष्य की दिशा में भी निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।



यमुना स्वच्छता अभियान में मदनगीर मंडल के कार्यकर्ताओं ने किया श्रमदान

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

नई दिल्ली। मां यमुना को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने के उद्देश्य से दिल्ली में चलाए जा रहे 'चलो यमुना अभियान' के अंतर्गत आईटीओ स्थित हाथी घाट सहित राजधानी के 70 यमुना घाटों पर स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान में हजारों दिल्लीवासियों ने भाग लेकर श्रमदान किया और मां यमुना के प्रति अपनी आस्था को सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण के संकल्प में परिवर्तित करने का संदेश दिया।

इस अवसर पर चन्द्रपाल बैरवा, दिल्ली प्रदेश मंत्री, अनुसूचित जाति मोर्चा, भाजपा एवं मदनगीर मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल के नेतृत्व में मदनगीर मंडल से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक अभियान में शामिल हुए। सभी ने यमुना की स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए स्वच्छ पर्यावरण और जनभागीदारी के महत्व को रेखांकित किया।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में चलाए जा रहे 'चलो यमुना अभियान' का उद्देश्य यमुना नदी और उसके घाटों को स्वच्छ रखने के लिए नागरिकों को जागरूक करना तथा सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना है। राजधानी के विभिन्न घाटों पर एक साथ हुए स्वच्छता प्रयासों ने यह संदेश दिया कि नदियों का संरक्षण केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक एवं सामाजिक कर्तव्य भी है। अभियान के माध्यम से लोगों से अपील की गई कि वे यमुना के घाटों और किनारों पर प्लास्टिक, पूजा सामग्री तथा अन्य कचरा न डालें। साथ ही घाटों की स्वच्छता बनाए रखें और अपने आसपास के लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करें। चन्द्रपाल बैरवा एवं दिलीप देवतवाल के नेतृत्व में मदनगीर मंडल की सहभागिता ने सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। इस प्रकार के सामूहिक प्रयासों से नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी की भावना मजबूत होती है।

मां यमुना की स्वच्छता हमारी आस्था, संस्कृति और पर्यावरण से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय है। आइए, हम सभी 'यमुना प्रहरी' बनकर यमुना को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने के संकल्प को मजबूत करें और स्वच्छता को केवल अभियान तक सीमित न रखकर अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं।



सीजेआई सूर्यकांत ने लद्दाख के लोगों, सैनिकों और सोनम वांगचुक को कर दिया खुश, लेह में हाईकोर्ट की बेंच का शुभारंभ

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष
लेह लद्दाख

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को बड़ी सौगात दी है। रविवार को उन्होंने लेह में जम्मू कश्मीर हाईकोर्ट की स्थायी बेंच का शुभारंभ किया। लेह में हाईकोर्ट की बेंच के लिए सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक और स्थानीय दल मांग करते रहे हैं। पिछली बार जब सूर्यकांत लेह गए थे तब उन्होंने सैनिकों से वादा किया था कि कानून उन तक पहुंचेगा

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) ने सैनिकों से किए गए वादे को रविवार को पूरा कर दिया। सीजेआई ने लेह में लद्दाख की पहली स्थायी हाईकोर्ट बेंच का उद्घाटना किया।

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट लद्दाख के सभी मामलों को एक ही दिन सूचीबद्ध करेगा और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए उनकी सुनवाई करेगा।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि लेह और कारगिल के वकील लद्दाख से बाहर जाए बिना ही अपनी दलीलें पेश कर सकेंगे।

गौरतलब को कि पिछली बार सूर्यकांत मार्च, 2026 में लेह पहुंचे थे तब उन्होंने सैनिकों से वादा किया है कि कानून को उनके द्वार तक पहुंचना होगा। गौरतलब हो कि संविधान की छठी अनुसूची में शामिल उठाने वाले सोनम वांगचुक की मांग थी कि लेह में हाईकोर्ट की बेंच हो।

सीजेआई ने सैनिकों से किया था वादा सीजेआई के मुताबिक अगर वह सीमा की रक्षा करते हैं तो देश का दायित्व है कि उनका कानून तक पहुंच सुनिश्चित करे।

तब पहली बार भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने लद्दाख में लेह मिलिट्री कैंप में सैन्यकर्मियों को संबंधोधित किया था।

सीजेआई ने तब लेह मिलिट्री कैंप में सैन्यकर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि कानून को सैनिक के द्वार तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने सीमा पर देश की रक्षा करने वाले जवानों और उनके परिवारों के लिए मुफ्त कानूनी सहायता योजनाओं पर जोर दिया। तब उन्होंने यह बात लेह में जिला न्यायालय परिसर का उद्घाटन करते हुई कही थी। 18 अक्टूबर को सीजेआई ने हाईकोर्ट की बेंच का भी शुभारंभ कर दिया

वीके सक्सेना, उपराज्यपाल लद्दाख यह ऐतिहासिक उपलब्धि न केवल लोगों की एक लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करती है, बल्कि न्याय को सीधे लोगों के द्वार तक पहुँचाती है। इससे दूर की यात्रा करने की आवश्यकता और आर्थिक बोझ खत्म होगा, और लद्दाख में न्यायिक प्रणाली और अधिक मजबूत होगी। लद्दाख के सभी नागरिकों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

लद्दाख को कैसे मिली हाईकोर्ट बेंच (कब क्या हुआ) सोनम वांगचुक और लद्दाख के अन्य राजनीतिक व सामाजिक नेता (जैसे 'लेह एपेक्स बॉडी' और 'कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस') लंबे समय से लेह में हाईकोर्ट की बेंच या अलग उच्च न्यायालय की मांग कर रह थे।

लद्दाख के निवासियों की लंबी मांग को देखते हुए केंद्र सरकार ने अगस्त 2026 में लद्दाख में हाईकोर्ट की बेंच को मंजूरी दी थी।

इसके बाद भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत ने आज 18 अक्टूबर 2026 को लेह में जम्मू-कश्मीर और लद्दाख उच्च न्यायालय की नई स्थायी बेंच का आधिकारिक उद्घाटन किया है।

अब लेह की हाईकोर्ट बेंच में 21 अक्टूबर 2026 से नियमित सुनवाई शुरू होगी।

केंद्र शासित प्रदेश को मिली अपनी बेंच सीजेआई सूर्यकांत लेह में लद्दाख की पहली स्थायी हाई कोर्ट बेंच का उद्घाटन से केंद्र शासित प्रदेश को बड़ी राहत मिली है। लद्दाख के मुख्य सचिव आशीष कुंद्रा ने कहा कि यह कदम बहुत महत्वपूर्ण बताया है क्योंकि इससे केंद्र शासित प्रदेश के लोगों को न्याय आसानी से मिल सकेगा।

अभी तक उन लोगों के लिए जो दूर-दराज के इलाकों में रहते हैं, जिन्हें भौगोलिक बाधाओं, खराब मौसम और लंबी दूरी के कारण उच्च न्यायिक संस्थानों तक पहुंचने में लंबे समय से कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।



लद्दाख के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना भी इस मौके पर मौजूद रहे। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख उच्च न्यायालय के प्रमुख मुख्य न्यायाधीश डॉ. पुष्पेंद्र सिंह भाटी हैं, उन्होंने 9 सितंबर, 2026 को शपथ ली।

अकोला में चौधरी चरण सिंह टेनिस क्रिकेट महाकुंभ का भव्य समापन, उपेन्द्र सिंह ने विजेता टीम को दिया 31 हजार का पुरस्कार

16 टीमों ने लिया प्रतियोगिता में भाग, घासी बाबा क्रिकेट क्लब अकोला बना विजेता, पवावली क्रिकेट क्लब रहा उपविजेता

अकोला (आगरा)। आगरा ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के अकोला में 4 अक्टूबर से चल रही चौधरी चरण सिंह टेनिस क्रिकेट महाकुंभ प्रतियोगिता का रविवार को भव्य समापन हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रमुख समाजसेवी सीपी चाहर उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में कुल 16 टीमों ने प्रतिभाग कर खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि वरिष्ठ भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह ने विजेता टीम घासी बाबा क्रिकेट क्लब, अकोला के कप्तान साहिल को 31,000 की पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया। वहीं, विशिष्ट अतिथि सीपी चाहर ने उपविजेता पवावली क्रिकेट क्लब के कप्तान सत्येंद्र सिंह को 15,000 का पुरस्कार प्रदान किया।

प्रतियोगिता के सफल आयोजन से क्षेत्र के युवाओं में खासा उत्साह देखने को मिला। पूरे आयोजन के दौरान खिलाड़ियों ने खेल भावना, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचय दिया। आयोजकों ने प्रतियोगिता के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने और युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

समापन अवसर पर अतिथियों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल युवाओं में अनुशासन, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता विकसित करते हैं। ऐसे आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम के अंत में विजेता एवं उपविजेता टीमों को बधाई दी गई तथा प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की गई। इस दौरान प्रभात चाहर, रविन्द्र सिंह, अमरपाल चाहर आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र बहल, लुवास द्वारा ईशरवाल में पशुपालकों के लिए किसान गोष्ठी का आयोजन

हरियाणा हिसार// राजेश सलूजा



हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र, बहल, भिवानी द्वारा राजकीय पशु चिकित्सालय ईशरवाल के सहयोग से "दुधारू पशुओं के प्रमुख जूनोटिक रोगः बचाव एवं नियंत्रण के उपाय" विषय पर किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

यह गोष्ठी लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास), हिसार के माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) विनोद कुमार वर्मा के दिशा-निर्देशन में आयोजित की गई।

कार्यक्रम का आयोजन लुवास, हिसार के अनुसंधान निदेशक डॉ. रजत गर्ग एवं प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. गौतम के मार्गदर्शन में किया गया। गोष्ठी के सफल आयोजन में क्षेत्रीय निदेशक, एचपीवीके बहल, डॉ. राजेश का मार्गदर्शन एवं सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा। इसके अतिरिक्त, राजकीय पशु चिकित्सालय, ईशरवाल के पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रमिल सांगवान ने कार्यक्रम के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम में लुवास, हिसार के सहायक प्रोफेसर, डॉ. मनेश कुमार ने पशुपालकों को पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले प्रमुख जूनोटिक रोगों, उनके संक्रमण के माध्यमों तथा बचाव एवं नियंत्रण के वैज्ञानिक उपायों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ब्रुसेलोसिस, क्षय रोग (टीबी) तथा रेबीज जैसे रोग पशु एवं मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बन सकते हैं। उन्होंने पशुओं के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, समय पर टीकाकरण, पशुशाला की स्वच्छता, दूध के उचित उष्मा-उपचार तथा संक्रमित सामग्री को संभालते समय आवश्यक सावधानियां बरतने पर जोर दिया।

राजकीय पशु चिकित्सालय, ईशरवाल के पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रमिल सांगवान ने पशुपालकों को पशुओं के संतुलित पोषण के लिए नियमित रूप से मिनरल मिक्सचर खिलाने तथा विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पशुओं की उचित देखभाल, संतुलित आहार और नियमित पशु चिकित्सा सेवाओं के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले रोगों के प्रति जागरूक करना तथा सुरक्षित दुग्ध उत्पादन, स्वच्छ डेयरी प्रबंधन और वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम के माध्यम से पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य एवं जनस्वास्थ्य के आपसी संबंध के बारे में जागरूक किया गया।

गोष्ठी के सफल आयोजन में श्री प्रदीप सांगवान, सहायक, एचपीवीके बहल तथा एचपीवीके के पशु परिचारक श्री मोहित एवं श्री राहुल का विशेष सहयोग रहा। इसके अतिरिक्त, राजकीय पशु चिकित्सालय, ईशरवाल के वीएलडीए श्री सुनील चहल एवं श्री प्रदीप पंघाल तथा पशु परिचारक श्री प्रीतम ने भी कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

नव श्री केशव रामलीला कमेटी रोहिणी

रामलीला के 8वें दिन राम सेतु निर्माण, अंगद रावण संवाद व लक्ष्मण मूर्छा संवाद ने लोगों का मनमोहा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्लीः राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने भगवान गणेश के आह्वान के साथ नव श्री केशव रामलीला कमेटी के 8वें दिन राम सेतु निर्माण, अंगद रावण संवाद व लक्ष्मण मूर्छा संवाद ने लोगों का मनमोह लिया। इस अवसर पर नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने कहा कि आज के मंचन की शुरुआत अंगद रावण संवाद से हुई। भगवान श्री राम के दूत अंगद ने रावण की सभा में पहुंचकर उसे धर्म व मर्यादा का उपदेश दिया। अंगद ने अपना पैर सभा में जमा कर रावण व उसके सेनापतियों को चुनौती दी, जिसे कोई हिला नहीं सका। इस दृश्य को देकर दर्शक भावविभोर हो गए।

इसके बाद लक्ष्मण व मेघनाथ के बीच युद्ध का अद्भुत प्रदर्शन किया गया। युद्ध के दृश्य इतने प्रभावशाली थे कि दर्शकों को रणभूमि का अनुभव हुआ। मेघनाद के प्रहार से लक्ष्मण मूर्छित होकर भूमि पर गिर पडे.। इस दृश्य को देकर कई रामभक्तों की आंखें नम हो गई। मंचन में हनुमान जी का गदा प्रहार व युद्ध कौशल ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उन्होंने बताया कि इस बार त्रिदेव थीम पर इस बार तीन मंजिला भव्य स्टेज पर लीला का मंचन हो रहा है। इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्तोत्र व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, कार्यालय महामंत्री पुरुषोतम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।

इस रंगमंच के जरिए उनका प्रयास बच्चों के मन में अपनी संस्कृति को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। आज टीवी कलाकार तनीषा मेहता जैसे ही स्टेज पर आए उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया। संस्था के सभी सदस्यों द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।



जनगणना ड्यूटी पर बड़ा कानूनी यू-टर्न!

लेखकः एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र

जनगणना अधिनियम 1948 की धारा 18(1) और नियम 1990 में पांचवां संशोधन — अब प्राइवेट टीचर, बैंककर्मी और कॉरपोरेट स्टाफ की भी लगेगी घर-घर ड्यूटी?

- 1. अधिसूचनाः 16 अक्टूबर 2026 को गृह मंत्रालय के तहत भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय ने अधिसूचना संख्या जी.एस.आर 896(ई) जारी की

- 2. कानूनी आधारः जनगणना अधिनियम 1948 की धारा 18(1) के तहत, जनगणना नियम 1990 के नियम 3 की तालिका में क्रम संख्या 5 के अंतर्गत प्रगणकों की नियुक्ति से संबंधित प्रविष्टियों को प्रतिस्थापित किया गया

- 3. दायरा हुआ व्यापकः अब नियुक्ति सिर्फ सरकारी शिक्षकों तक सीमित नहीं, निजी शिक्षण संस्थानों और विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों के पात्र व्यक्ति भी शामिल

- 4. पांचवां संशोधनः इससे पहले नियम 1990 में 1994, 2009, 2018 और 2022 में संशोधन हुए थे — यह पांचवां संशोधन है

- 5. हाईकोर्ट मामलाः पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में हरियाणा प्रोग्रेसिव स्कूल्स कॉन्फ्रेंस की याचिका, न्यायमूर्ति हरप्रीत सिंह बराड़ ने 8 अक्टूबर 2026 को हरियाणा सरकार के दो पत्रों पर रोक लगाई थी

- 6. अगली सुनवाईः 29 अप्रैल 2027

तथ्य तालिका

विषय- विवरण - अधिनियम
जनगणना अधिनियम, 1948
नियम जनगणना नियम, 1990
अधिसूचना जी.एस.आर 896(ई), 16 अक्टूबर 2026
धारा धारा 18(1)
प्रभाव राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रभावी
जनगणना जनगणना 2027, दो चरण — 1. गृह सूचीकरण और आवास गणना, 2. जनसंख्या गणना

किन-किन लोगों की लग सकती है ड्यूटी? तीन श्रेणियां

पहली श्रेणी — शिक्षकः सरकारी शिक्षण संस्थान, स्थानीय प्राधिकरण, सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त निजी संस्थाओं, सोसायटियों तथा न्यासों के किसी भी शैक्षणिक संस्थान के शिक्षक। निजी स्कूलों के शिक्षकों का स्पष्ट उल्लेख पहली बार हुआ है।

दूसरी श्रेणी — लिपिक और अधिकारीः केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय प्राधिकरण, पीएसयू, वैधानिक निकाय, बैंक, कंपनियां, संस्थान, सोसायटी और न्यास के लिपिक और अन्य अधिकारी। बैंककर्मी और कॉरपोरेट कर्मचारी इसी दायरे में आ सकते हैं।

तीसरी श्रेणी — सबसे व्यापकः राज्य सरकार या केंद्रशासित प्रदेश प्रशासन जिस व्यक्ति को प्रगणक के रूप में उपयुक्त समझे, उसे नियुक्त कर सकता है।

महत्वपूर्ण स्पष्टीकरणः पात्रता का अर्थ स्वतः नियुक्ति नहीं है। हर निजी शिक्षक, बैंककर्मी या कंपनी कर्मचारी की ड्यूटी स्वतः नहीं लग जाएगी। वास्तविक नियुक्ति संबंधित प्रशासन के निर्णय, आवश्यकता और जारी आदेशों पर निर्भर करेगी।

हाईकोर्ट में विवाद क्या था? हरियाणा प्रोग्रेसिव स्कूल्स कॉन्फ्रेंस ने गैर-सहायता प्राप्त निजी स्कूलों के शिक्षकों की सेवाएं लेने के फैसले को चुनौती दी थी। तर्क था — धारा 4ए में केवल स्थानीय प्राधिकरणों के अधिकारियों की सेवाएं लेने का प्रावधान है, गैर-सहायता प्राप्त निजी स्कूलों के शिक्षक स्थानीय प्राधिकरण के कर्मचारी नहीं हैं।

8 अक्टूबर 2026 को न्यायमूर्ति हरप्रीत सिंह बराड़ ने हरियाणा सरकार के उन दो पत्रों पर रोक लगाई, जिनसे शिक्षकों का विवरण मांगा गया था। इसके 8 दिन बाद 16 अक्टूबर को केंद्र ने संशोधित नियम जारी किए।

इससे यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं कि संशोधन केवल अदालत के आदेश को निष्प्रभावी करने के लिए था। संशोधन का घोषित कानूनी आधार धारा 18(1) है। इसका असली प्रभाव अगली सुनवाई और प्रशासन के अगले कदमों पर निर्भर करेगा।

जनगणना 2027 क्यों महत्वपूर्ण है? 2021 की जनगणना कोविड-19 के कारण स्थगित हुई थी। अब 2027 में जनगणना आबादी, आवास, सामाजिक संरचना और विकास योजनाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, परिवहन और बुनियादी सुविधाओं की योजनाएं बनेंगी। लाखों परिवारों तक पहुंचने के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित प्रगणकों की जरूरत है।

साथ ही यह भी जरूरी है कि निजी संस्थानों के कर्मचारियों को शामिल करते समय उनकी नियमित जिम्मेदारियों, कार्य-व्यवस्था और लागू निर्देशों का समुचित ध्यान रखा जाए, और नियुक्त व्यक्तियों को उचित प्रशिक्षण, प्रक्रिया का पालन और आंकड़ों की शुद्धता व गोपनीयता सुनिश्चित हो।

निष्कर्ष — समग्र विश्लेषण यह संशोधन देश के सबसे बड़े सांख्यिकीय अभियान के लिए मानव संसाधन जुटाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और कानूनी कदम है। निजी स्कूलों के शिक्षक, बैंककर्मी, विभिन्न कंपनियों के अधिकारी और अन्य पात्र कर्मचारी अब प्रगणक नियुक्त किए जाने के स्पष्ट नियमगत दायरे में आ सकते हैं।

फिर भी, पात्रता का अर्थ स्वतः नियुक्ति नहीं है और संशोधित नियमों का अर्थ यह भी नहीं कि न्यायालय में लंबित विवाद का अंतिम निर्णय हो चुका है। हरियाणा का मामला इस बात की परीक्षा बनेगा कि बदले हुए नियमों के तहत नियुक्तियों की वैधानिकता, पहले दिए गए न्यायिक आदेशों और प्रशासनिक अधिकारों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित होता है।

अब सबकी निगाहें 29 अप्रैल 2027 की प्रस्तावित सुनवाई और जनगणना ड्यूटी को लेकर आगे जारी होने वाले सरकारी निर्देशों पर रहेंगी।



पंखों की फड़फड़ाहट से आगे: जंगली पक्षी प्रकृति की मदद से उड़ान को अधिक कुशल कैसे बनाते हैं?



● डॉ. विजय गर्ग

पक्षी अनुकूल वायु प्रवाह की पहचान कैसे करते हैं? उनका उड़ान व्यवहार जन्मजात क्षमताओं, इंद्रियों से प्राप्त जानकारी और अनुभव के मेल को दर्शाता है। वे हवा की दिशा, दिखाई देने वाले प्राकृतिक संकेतों और आसपास के परिवर्तनों के अनुसार अपनी उड़ान में बदलाव कर सकते हैं।
प्रवासी पक्षियों के लिए यह क्षमता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उन्हें ऊर्जा की खपत, मौसम, भोजन की उपलब्धता और प्रजनन या शीतकालीन निवास स्थलों तक समय पर पहुँचने के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। अनुकूल हवाओं और ऊपर उठती हवा का उपयोग उनकी यात्रा में लगने वाले शारीरिक प्रयास को कम कर सकता है तथा सीमित ऊर्जा भंडार के साथ लंबी दूरी तय करने में मदद कर सकता है।

उड़ान प्रकृति की सबसे अद्भुत उपलब्धियों में से एक है। पक्षी महाद्वीपों को पार करते हैं, पहाड़ों के ऊपर उड़ते हैं और हजारों किलोमीटर की यात्रा असाधारण सटीकता के साथ पूरी करते हैं। यद्यपि उनके पंख उड़ने के लिए आवश्यक शक्ति प्रदान करते हैं, लेकिन लगातार पंख फड़फड़ाना ही उनकी लंबी और ऊर्जा-कुशल उड़ान का एकमात्र कारण नहीं है। अनेक जंगली पक्षी प्राकृतिक वायु प्रवाह, ऊपर उठती गर्म हवा और हवाओं की दिशा का लाभ उठाकर उड़ान में खर्च होने वाली ऊर्जा को कम कर लेते हैं। हवा में मौजूद इस अदृश्य सहायता का उपयोग करके वे दिखाते हैं कि प्रकृति किस प्रकार गति को अधिक कुशल बना सकती है।

पक्षियों की उड़ान पर हो रहे वैज्ञानिक शोध से यह समझने में मदद मिल रही है कि वे शारीरिक शक्ति, पर्यावरण की समझ और सहज व्यवहार के माध्यम से ऊर्जा की बचत कैसे करते हैं। उनकी ये क्षमताएँ न केवल वन्यजीवों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि अधिक कुशल विमान बनाने और वायुगतिकी के बारे में हमारी जानकारी बढ़ाने में भी उपयोगी हैं।



आकाश भी है ऊर्जा का स्रोत

पक्षियों को हवा में बने रहने के लिए हर समय अपने पंख फड़फड़ाने की आवश्यकता नहीं होती। अनुकूल वायुमंडलीय परिस्थितियों में हवा स्वयं उन्हें ऊपर उठने में सहायता कर सकती है। इसका एक प्रमुख उदाहरण गर्म हवा के ऊपर उठते प्रवाह का उपयोग है। सूर्य की गर्मी जब धरती की सतह को अलग-अलग मात्रा में गर्म करती है, तो गर्म हवा के कुछ हिस्से ऊपर उठने लगते हैं। ऐसे वायु प्रवाह को थर्मल करंट कहा जाता है।

बाज, गिद्ध और कुछ सारस जैसे बड़े पक्षी इन वायु प्रवाहों का नियमित रूप से लाभ उठाते हैं। वे ऊपर उठती हवा में गोल-गोल चक्कर लगाते हुए ऊँचाई प्राप्त करते हैं और फिर अपने अगले गंतव्य की ओर फिसलती हुई उड़ान भरते हैं। इस प्रक्रिया को दोहराकर वे अपनी मांसपेशियों पर कम दबाव डालते हुए लंबी दूरी तय कर सकते हैं।

यह तरीका विशेष रूप से उन पक्षियों के लिए उपयोगी है जिनके पंख चौड़े और शरीर अपेक्षाकृत बड़े होते हैं। उनकी शारीरिक बनावट उन्हें हवा में कुशलतापूर्वक बने रहने और प्राकृतिक रूप से ऊपर उठती हवा का लाभ उठाने में सक्षम बनाती है।

हवाओं से ऊर्जा की बचत

थर्मल करंट ही उड़ान में प्रकृति की ओर से मिलने वाली एकमात्र सहायता नहीं हैं। जब हवा पहाड़ियों, चट्टानों और पर्वतों से टकराती है, तो वह ऊपर की ओर मुड़ सकती है। पक्षी इन वायु प्रवाहों का उपयोग अपनी ऊँचाई बनाए रखने के लिए करते हैं। इस तकनीक को रिज सोअरिंग कहा जाता है।

कुछ समुद्री पक्षी डायनेमिक सोअरिंग नामक तकनीक का उपयोग करते हैं। वे अलग-अलग ऊँचाइयों पर बहने वाली हवाओं की गति में अंतर का लाभ उठाकर ऊर्जा प्राप्त करते हैं। एल्बाट्रॉस पक्षी इस तकनीक के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। वे समुद्र के विशाल विस्तार पर बहुत कम पंख फड़फड़ाते हुए लंबी यात्राएँ कर सकते हैं।

यह व्यवहार बताता है कि कुशल उड़ान केवल पंखों की बनावट पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सही मार्ग, उपयुक्त ऊँचाई और वायुमंडलीय परिस्थितियों के चुनाव पर भी निर्भर करती है। पक्षी अपने आसपास के वातावरण को अपनी उड़ान प्रणाली का हिस्सा बना लेते हैं।

सहज क्षमता, अनुभव और पर्यावरण की समझ

पक्षी अनुकूल वायु प्रवाह की पहचान कैसे करते हैं? उनका उड़ान व्यवहार जन्मजात क्षमताओं, इंद्रियों से प्राप्त जानकारी और अनुभव के मेल को दर्शाता है। वे हवा की दिशा, दिखाई देने वाले प्राकृतिक संकेतों और आसपास के परिवर्तनों के अनुसार अपनी उड़ान में बदलाव कर सकते हैं।

प्रवासी पक्षियों के लिए यह क्षमता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उन्हें ऊर्जा की खपत, मौसम, भोजन की उपलब्धता और प्रजनन या शीतकालीन निवास स्थलों तक समय पर पहुँचने के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। अनुकूल हवाओं और ऊपर उठती हवा का उपयोग उनकी यात्रा में लगने वाले शारीरिक प्रयास को कम कर सकता है तथा सीमित ऊर्जा भंडार के साथ लंबी दूरी तय करने में मदद कर सकता है।

हालाँकि, पक्षी हर परिस्थिति में प्राकृतिक वायु सहायता पर निर्भर नहीं रह सकते। उड़ान शुरू करने, दिशा बदलने, कम गति से उड़ने और प्रतिकूल वायु परिस्थितियों में पंख फड़फड़ाना आवश्यक होता है। इसलिए कुशल उड़ान विभिन्न तकनीकों का परिस्थितियों के अनुसार उपयोग करने से संभव होती है।

विमानन और तकनीक के लिए महत्त्वपूर्ण सबक

पक्षियों की उड़ान इंजीनियरों के लिए प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। विमान निर्माता लगातार ईंधन की खपत कम करने, वायुगतिकीय प्रदर्शन सुधारने और उड़ान की दूरी बढ़ाने के उपाय खोजते रहते हैं। पक्षियों द्वारा प्राकृतिक उठती हवा के उपयोग का अध्ययन अधिक कुशल उड़ान-योजना प्रणालियों, ग्लाइडरों और स्वायत्त उड़ने वाले यंत्रों के विकास में सहायता कर सकता है।

मानवरहित विमान हवा के ऊपर उठते प्रवाह का लाभ उठाकर अधिक समय तक उड़ सकते हैं। इससे बैटरी या अन्य ऊर्जा स्रोतों पर उनकी निर्भरता कम करने की संभावना बढ़ती है। वायुमंडलीय गतिविधियों की बेहतर समझ पारंपरिक विमानों के मार्ग नियोजन में भी सहायक हो सकती है, हालाँकि विमानन सुरक्षा और संचालन संबंधी आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है।

इससे मिलने वाला व्यापक संदेश यह है कि दक्षता हमेशा अधिक शक्ति उत्पन्न करने से नहीं आती। कई बार पहले से उपलब्ध प्राकृतिक ऊर्जा को पहचानने और उसका सही उपयोग करने से भी बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

पक्षियों की उड़ान के लिए प्रकृति का संरक्षण

पक्षियों का जीवन स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और उपयुक्त प्राकृतिक आवासों पर निर्भर करता है। प्राकृतिक आवासों का विनाश, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और मानवीय हस्तक्षेप उनके अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। मौसम में बदलाव उन वायु प्रवाहों की उपलब्धता और नियमितता को भी प्रभावित कर सकता है, जिन पर कुछ पक्षियों की उड़ान निर्भर करती है।

इसलिए आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों, जंगलों, तटीय क्षेत्रों और पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्रों का संरक्षण आवश्यक है। इमारतों, बिजली की तारों और पवन टर्बाइनों से उत्पन्न जोखिमों पर भी ध्यान देना चाहिए, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ से प्रवासी पक्षियों के बड़े समूह गुजरते हैं।

पक्षियों की उड़ान संबंधी रणनीतियों को समझने से संरक्षण योजनाओं को बेहतर बनाया जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वन्यजीवों का जीवन प्राकृतिक वातावरण से कितनी गहराई से जुड़ा हुआ है।

जंगली पक्षी हमें सिखाते हैं कि उड़ान केवल पंखों को तेजी से फड़फड़ाने या अधिक मांसपेशीय शक्ति लगाने का नाम नहीं है। यह प्रकृति के साथ तालमेल स्थापित करने की कला भी है। थर्मल करंट, पहाड़ी वायु प्रवाह और हवाओं की गति में अंतर का लाभ उठाकर अनेक पक्षी ऊर्जा बचाते हैं और असाधारण दूरियाँ तय करते हैं।

उनकी क्षमताएँ हमें दक्षता के बारे में नए सिरे से सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रकृति में सफलता अक्सर हर समय अधिकतम प्रयास करने के बजाय उपलब्ध संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करने में निहित होती है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक पक्षियों की उड़ान के रहस्यों को समझेंगे, ये अद्भुत जीव मानवता को अधिक ऊर्जा-कुशल, पर्यावरण-अनुकूल और प्रकृति से प्रेरित तकनीकें विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक
स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब –



संपादकीय
चिंतन-मनन

शब्द मशीन के, भावनाएँ किसकी?

डॉ. विजय गर्ग

कविता मनुष्य की संवेदनाओं, कल्पनाओं, अनुभवों और आंतरिक संघर्षों की अभिव्यक्ति है। सदियों से कवि अपने सुख-दुःख, प्रेम-विरह, प्रकृति, सामाजिक विषमताओं और जीवन के गहरे प्रश्नों को शब्दों में ढालते आए हैं। कविता केवल शब्दों का सुंदर संयोजन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर घटित होने वाली भावनात्मक यात्रा है। लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के तेजी से विकास ने एक नया प्रश्न खड़ा कर दिया है—यदि मशीन भी कविता लिख सकती है, तो उन शब्दों में भावनाएँ किसकी हैं?

आज एआई कुछ ही क्षणों में गीत, ग़ज़ल, दोहे, मुक्त छंद और लंबी कविताएँ रच सकता है। वह किसी विशेष कवि की शैली से मिलती-जुलती भाषा अपना सकता है, प्रेम की कोमलता व्यक्त कर सकता है, विरह की पीड़ा का वर्णन कर सकता है और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रभावशाली पंक्तियाँ प्रस्तुत कर सकता है। उसकी भाषा कभी-कभी इतनी सहज और भावपूर्ण होती है कि पाठक के लिए यह पहचानना कठिन हो जाता है कि कविता किसी मनुष्य ने लिखी है या मशीन ने।

लेकिन इस उपलब्धि के पीछे एक महत्वपूर्ण अंतर छिपा है—भावनाओं का वर्णन करना और स्वयं भावनाओं का अनुभव करना दो अलग-अलग बातें हैं।

शब्दों की नकल या संवेदना की अभिव्यक्ति?

एक कवि जब किसी प्रियजन को खोने का दुख लिखता है, तो संभव है कि उसके शब्दों के पीछे व्यक्तिगत स्मृतियाँ, अधूरी इच्छाएँ और वास्तविक पीड़ा हो। किसी माँ की ममता पर लिखी कविता में कवि अपने बचपन, पारिवारिक संबंधों और जीवन के अनुभवों की छाप छोड़ सकता है। इसी प्रकार, गरीबी पर लिखी कविता किसी ऐसे व्यक्ति के अनुभव से जन्म ले सकती है जिसने अभाव को निकट से देखा हो।

इसके विपरीत, एआई भाषा के विशाल भंडार, सीखे गए भाषाई प्रतिरूपों और संदर्भों के आधार पर शब्दों का चयन करता है। वह पहचान सकता है कि दुख की कविता में किस प्रकार के शब्द उपयुक्त होंगे, प्रेम का वर्णन कैसे किया जाता है और प्रकृति की सुंदरता को किन उपमाओं से व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वह स्वयं दुख, प्रेम या सौंदर्य का अनुभव करता है।

यदि कोई मशीन लिखती है, "मेरी आँखों में रात भर आँसू रहे", तो वह वाक्य भावुक हो सकता है। फिर भी मशीन के आँसू बहाने या रात भर जागकर किसी की प्रतीक्षा करने का कोई प्रमाण नहीं है। उसकी भाषा मानवीय अनुभव का प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत कर सकती है, पर भाषा में व्यक्त अनुभव और उसे वास्तव में जीना एक समान नहीं हैं।

क्या पाठक के लिए भावनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं?

कविता का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं किया जाता कि उसे किसने लिखा है। पाठक के लिए कविता का प्रभाव, उसकी कल्पनाशीलता, भाषा की सुंदरता और विचारों की गहराई भी महत्वपूर्ण हैं। यदि एआई द्वारा लिखी गई कोई कविता किसी व्यक्ति को सांत्वना देती है, उसे प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाती है या सामाजिक अन्याय पर सोचने के लिए प्रेरित करती है, तो उसका प्रभाव वास्तविक हो सकता है।

इस अर्थ में कविता का प्रभाव और कवि का आंतरिक अनुभव अलग-अलग प्रश्न हैं। पाठक किसी कविता को पढ़कर सचमुच भावुक हो सकता है, भले ही उसे लिखने वाली मशीन स्वयं भावनाओं का अनुभव न करती हो। शब्दों से उत्पन्न होने वाली मानवीय प्रतिक्रिया वास्तविक है, लेकिन उससे मशीन की चेतना या संवेदनशीलता सिद्ध नहीं होती।

यही एआई कविता का सबसे रोचक पहलू है। मशीन भावनाओं को व्यक्त करने वाली भाषा तैयार कर सकती है, जबकि उन शब्दों से भावनात्मक संबंध स्थापित करने वाला व्यक्ति पाठक हो सकता है।

रचनात्मकता की नई परिभाषा

लंबे समय तक कविता को मानवीय कल्पना और मौलिकता का विशिष्ट क्षेत्र माना जाता रहा है। अब एआई इस धारणा को चुनौती दे रहा है। वह नए विचारों के संयोजन, अप्रत्याशित उपमाओं और अलग-अलग भाषाई शैलियों के प्रयोग से ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत कर सकता है जो पाठक को आकर्षित करती हैं।

हालाँकि, रचनात्मकता केवल नया वाक्य बनाने तक सीमित नहीं है। इसमें अनुभवों का चयन, सामाजिक संदर्भों की समझ, नैतिक दृष्टिकोण, जीवन के विरोधाभासों को पहचानना और अपने विचारों की जिम्मेदारी लेना भी शामिल है। एआई इन पहलुओं में उपयोगी सहायता दे सकता है, लेकिन उसके द्वारा प्रस्तुत सामग्री की सत्यता, उपयुक्तता और सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन मनुष्यों को करना चाहिए।

कवि एआई की सहायता से नए बिंब खोज सकता है, कविता के कई प्रारूप तैयार कर सकता है, भाषा सुधार सकता है और अपनी रचना के कमजोर पक्ष पहचान सकता है। इस प्रकार तकनीक रचनात्मक प्रक्रिया को समृद्ध करने का माध्यम बन सकती है। लेकिन यदि कवि अपनी अनुभूतियों, विचारों और विवेक का उपयोग करना छोड़ दे, तो रचना शब्दों की चमक तक सीमित रह सकती है।

क्या मशीनें कवियों की जगह ले लेंगी?

एआई के कारण कविता के क्षेत्र में अवसर भी बढ़ेंगे और चुनौतियाँ भी सामने आएँगी। नए रचनाकार भाषा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने के लिए इसका उपयोग कर सकेंगे। विद्यार्थी कविता की संरचना, छंद, प्रतीक और अलंकार समझ सकेंगे। लेखक विभिन्न विचारों पर प्रयोग कर सकेंगे और अपनी रचनात्मक सीमाओं को आगे बढ़ा सकेंगे।

दूसरी ओर, बिना किसी संशोधन के एआई से तैयार कविता को अपनी मौलिक रचना बताना लेखकीय ईमानदारी से जुड़ा प्रश्न है। साहित्यिक प्रतियोगिताओं, प्रकाशन और शैक्षणिक कार्यों में यह स्पष्ट होना चाहिए कि तकनीक का उपयोग कहाँ और किस सीमा तक किया गया है। मौलिकता, लेखकीय श्रेय और बौद्धिक संपदा से संबंधित नियमों का सम्मान भी आवश्यक है।

मशीन कविता लिखने में सहायता कर सकती है, लेकिन कवि की व्यक्तिगत पहचान, जीवन-दृष्टि और सामाजिक जिम्मेदारी का स्थान स्वतः नहीं ले सकती। मनुष्य की विशिष्टता केवल सुंदर शब्दों में नहीं, बल्कि उन अनुभवों और निर्णयों में भी निहित है जिनसे उसकी रचना जन्म लेती है।

भविष्य: प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग

भविष्य की कविता संभवतः मनुष्य और मशीन के सहयोग से विकसित होगी। एआई भाषा के विकल्प प्रस्तुत करेगा, जबकि कवि उन विकल्पों में से अर्थपूर्ण विचार चुनेगा, अपने अनुभव जोड़ेगा और रचना को मानवीय संदर्भ प्रदान करेगा। मशीन कविता का प्रारूप तैयार कर सकती है, लेकिन उसकी गहराई बढ़ाने के लिए मनुष्य को अपने विवेक, कल्पना और संवेदनशीलता का उपयोग करना होगा।

यह भी आवश्यक है कि पाठक कविता को केवल उसकी भावुक भाषा के आधार पर न आँकें। उन्हें यह समझना चाहिए कि प्रभावशाली शब्द अपने आप में वास्तविक अनुभव या नैतिक प्रतिबद्धता का प्रमाण नहीं होते। तकनीक के युग में साहित्यिक समझ और आलोचनात्मक दृष्टि का महत्व और बढ़ जाएगा।

अंततः प्रश्न यह नहीं है कि मशीन कविता लिख सकती है या नहीं। वह लिख सकती है, और उसकी क्षमता लगातार विकसित हो रही है। असली प्रश्न यह है कि कविता में शब्दों के अतिरिक्त क्या होना चाहिए—अनुभव, चेतना, कल्पना, सत्य और जीवन के प्रति जिम्मेदारी।

शब्द मशीन के हो सकते हैं, लेकिन उन शब्दों में अर्थ, मूल्य और संवेदना खोजने का कार्य अभी भी मनुष्य के हाथों में है। कविता की वास्तविक शक्ति केवल सुंदर पंक्तियों में नहीं, बल्कि उस विचार और अनुभूति में है जो पाठक के मन में लंबे समय तक जीवित रहती है। तकनीक शब्दों की दुनिया को व्यापक बना सकती है, पर उन शब्दों का मानवीय अर्थ समझना हमारी जिम्मेदारी है।

इसलिए भविष्य की कविता में मशीन को केवल प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखने के बजाय एक सहायक उपकरण के रूप में देखना अधिक उपयोगी होगा। आखिरकार, कविता का उद्देश्य केवल शब्दों को सजाना नहीं, बल्कि मनुष्य को स्वयं से, दूसरे मनुष्यों से और संसार से जोड़ना है।

पहले सुनें, फिर बोलें: नई भाषा सीखने का विज्ञान

डॉ. विजय गर्ग*

नई भाषा सीखने का संबंध अक्सर शब्दावली याद करने, व्याकरण के नियमों का अध्ययन करने और बातचीत का अभ्यास करने से जोड़ा जाता है। लेकिन भाषा सीखने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया बोलने से पहले शुरू होती है—सुनना। ध्वनियों को पहचानने, अभिव्यक्तियों को समझने और बातचीत में बार-बार आने वाले भाषाई पैटर्न को पहचानने की क्षमता प्रभावी संचार की नींव रखती है। सुनने से सीखने वाले व्यक्ति को भाषा की लय, उच्चारण और संरचना से परिचित होने का अवसर मिलता है, जिससे समय के साथ बोलना और पढ़ना आसान हो जाता है।

भाषा केवल शब्दों और व्याकरण के नियमों का संग्रह नहीं है। यह ध्वनियों, अर्थों, भावनाओं और सामाजिक संबंधों की एक जीवंत व्यवस्था है। किसी भाषा को सफलतापूर्वक सीखने के लिए यह समझना आवश्यक है कि वास्तविक परिस्थितियों में उसका उपयोग कैसे किया जाता है। यही कारण है कि भाषा शिक्षा में सुनने को केंद्रीय स्थान मिलना चाहिए।

सुनना सबसे पहले क्यों आवश्यक है?

बच्चे सामान्यतः अपनी पहली भाषा माता-पिता, परिवार के सदस्यों और आसपास के लोगों को सुनकर सीखते हैं। स्पष्ट रूप से बोलना शुरू करने से बहुत पहले वे हजारों शब्द सुनते हैं, चेहरे के भाव देखते हैं और धीरे-धीरे ध्वनियों को अर्थों से जोड़ना सीखते हैं। बार-बार सुनने से वे परिचित शब्दों को पहचानने और सरल निर्देशों को समझने लगते हैं। अंततः वे अपने शब्द और वाक्य बनाना शुरू कर देते हैं।

हालाँकि, दूसरी भाषा सीखने वाले वयस्कों के लिए यह प्रक्रिया कुछ अलग हो सकती है, लेकिन इसका मूल सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण है। सुनने से सीखने वालों को यह समझने का अवसर मिलता है कि कुशल वक्ता शब्दों का उच्चारण कैसे करते हैं, वाक्य कैसे बनाते हैं और अपने विचार किस प्रकार व्यक्त करते हैं। इससे भाषा को केवल पाठ्यपुस्तकों में पढ़ने के बजाय उसके स्वाभाविक रूप को समझने में मदद मिलती है।

नियमित रूप से सुनने पर विद्यार्थी सामान्य अभिव्यक्तियों, वाक्यों के पैटर्न और उच्चारण के अंतर को पहचानने लगते हैं। इससे बोली को समझने में लगने वाला मानसिक प्रयास कम होता है और बोलने के लिए मजबूत आधार तैयार होता है।

सुनने और भाषा सीखने के पीछे का विज्ञान

मानव मस्तिष्क में पैटर्न पहचानने की अद्भुत क्षमता होती है। जब कोई व्यक्ति किसी भाषा को बार-बार सुनता है, तो उसका मस्तिष्क उस भाषा की ध्वनियों, अक्षर-ध्वनियों, शब्दों और व्याकरणिक संरचनाओं के बीच अंतर पहचानना शुरू कर देता है। इस प्रक्रिया को सांख्यिकीय अधिगम कहा जाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति भाषा में बार-बार दिखाई देने वाले नियमों और प्रवृत्तियों को समझने लगता है।

उदाहरण के लिए, अंग्रेजी सीखने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे समझ सकता है कि प्रश्न कैसे बनाए जाते हैं, कौन-से शब्द सामान्यतः एक साथ आते हैं और बातचीत के दौरान शब्द एक-दूसरे से कैसे जुड़ते हैं। प्रत्येक व्याकरणिक नियम को अलग से याद किए बिना भी वह भाषा की संरचना की सहज समझ विकसित कर सकता है।

सुनने से ध्वनियों और अर्थों के बीच संबंध भी मजबूत होता है। जब कोई शब्द अर्थपूर्ण संदर्भ में सुनाई देता है, तो आसपास की जानकारी उसका अर्थ समझने में सहायता करती है। बार-बार सुनने से भविष्य में उस शब्द को पहचानना आसान हो जाता है।

हालाँकि, केवल सुनते रहना पर्याप्त नहीं है। प्रभावी सीखने के लिए ध्यान, दोहराव, समझ और भाषा का उपयोग करने के अवसर भी आवश्यक हैं। सुनना तभी अधिक उपयोगी बनता है, जब विद्यार्थी सक्रिय रूप से सुनी गई सामग्री को समझने का प्रयास करते हैं।

बोलने से पहले समझना

बहुत से भाषा सीखने वाले तुरंत बोलने का दबाव महसूस करते हैं। उन्हें गलतियाँ करने, शब्द भूलने या दूसरों द्वारा आंका जाने का डर रहता है। यह चिंता उनकी भागीदारी कम कर सकती है और सीखने की प्रक्रिया को कठिन बना सकती है।

शुरुआती चरण में सुनने को प्राथमिकता देने से यह दबाव कम किया जा सकता है। विद्यार्थी पहले अभिवादन, रोजमर्रा की अभिव्यक्तियों और सरल बातचीत से परिचित हो सकते हैं। जैसे-जैसे उनकी समझ बढ़ती है, वे समान अभिव्यक्तियों का उपयोग करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि बोलने का अभ्यास अनिश्चित समय तक टाल दिया जाए। सुनना और बोलना एक-दूसरे के पूरक हैं। विद्यार्थियों को उच्चारण का अभ्यास करने, वाक्य बनाने और अपनी गलतियों पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के अवसर मिलने चाहिए। महत्वपूर्ण बात यह है कि सुनना बोलने के लिए उपयोगी उदाहरण प्रदान करता है।



उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति नई भाषा सीखते समय परिचय, खरीदारी या यात्रा से संबंधित छोटे संवाद सुन सकता है। अभिव्यक्तियों को समझने के बाद वह उन्हें दोहरा सकता है, किसी साथी के साथ अभ्यास कर सकता है और फिर नई परिस्थितियों में उनका उपयोग कर सकता है।

अर्थपूर्ण सुनने का महत्व

सुनने की सभी गतिविधियाँ समान रूप से प्रभावी नहीं होतीं। यदि सामग्री विद्यार्थी के स्तर से बहुत कठिन हो, तो निराशा पैदा हो सकती है। इसके विपरीत, अत्यधिक सरल सामग्री से सीखने के नए अवसर सीमित हो सकते हैं।

सबसे उपयोगी तरीका ऐसी सामग्री चुनना है जिसे विद्यार्थी अधिकांशतः समझ सके, लेकिन जिसमें कुछ नए शब्द और अभिव्यक्तियाँ भी हों। छोटे संवाद, कहानियाँ, पॉडकास्ट, गीत और शैक्षिक वीडियो इस उद्देश्य के लिए उपयोगी हो सकते हैं। संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। चित्र, हाव-भाव, परिचित परिस्थितियाँ और दिखाई देने वाली गतिविधियाँ अपरिचित शब्दों को समझने में सहायता करती हैं। इससे विद्यार्थी प्रत्येक वाक्य का अपनी मातृभाषा में अनुवाद किए बिना नई भाषा में अर्थ समझना सीख सकते हैं।

एक ही सामग्री को बार-बार सुनना भी लाभदायक है। पहली बार सुनने पर सामान्य अर्थ समझ में आ सकता है, जबकि बाद के प्रयासों में उच्चारण, वाक्य संरचना और अपरिचित अभिव्यक्तियों पर ध्यान दिया जा सकता है।

भाषा सीखने में तकनीक की भूमिका

डिजिटल तकनीक ने भाषा सीखने के संसाधनों तक पहुँच आसान बना दी है। मोबाइल ऐप, ऑनलाइन वीडियो, ऑडियो पुस्तकें, पॉडकास्ट और रिकॉर्ड की गई बातचीत विद्यार्थियों को अलग-अलग उच्चारणों और बोलने की शैलियों से परिचित कराती हैं।

शुरुआती विद्यार्थियों के लिए उसी भाषा में उपशीर्षक देखकर वीडियो सुनना उपयोगी हो सकता है। बाद में वे उपशीर्षकों के बिना वही सामग्री सुनकर अपनी समझ की जाँच कर सकते हैं।

फिर भी, तकनीक को वास्तविक बातचीत का विकल्प नहीं मानना चाहिए। लोगों के साथ संवाद करने से प्रश्न पूछने, गलतफहमियाँ दूर करने और दूसरों के विचारों का उत्तर देने के अवसर मिलते हैं। रिकॉर्ड की गई सामग्री और वास्तविक बातचीत का संतुलित उपयोग भाषा सीखने को अधिक प्रभावी बना सकता है।

विद्यार्थियों के लिए एक व्यावहारिक दिनचर्या

सुनने की क्षमता विकसित करने के लिए महँगे पाठ्यक्रमों या प्रतिदिन कई घंटे अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभार लंबे अभ्यास की तुलना में नियमित अभ्यास अधिक उपयोगी हो सकता है।

विद्यार्थी प्रतिदिन दस से पंद्रह मिनट ध्यानपूर्वक सुनने से शुरुआत कर सकते हैं। पहले किसी छोटी रिकॉर्डिंग को सुनकर उसका सामान्य अर्थ समझने का प्रयास करें। फिर दोबारा सुनकर परिचित शब्दों की पहचान करें। कुछ महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों के अर्थ जानने के बाद चुने हुए वाक्यों को जोर से दोहराएँ।

उपयोगी वाक्यांशों को एक नोटबुक में लिखना और रोजमर्रा की परिस्थितियों में उनका अभ्यास करना सीखने को मजबूत बनाता है। जैसे-जैसे समझ बढ़ती है, विद्यार्थी लंबी बातचीत और अधिक चुनौतीपूर्ण सामग्री की ओर बढ़ सकते हैं। शिक्षक भी कहानियों, संवादों, ऑडियो रिकॉर्डिंग और सुनने पर आधारित गतिविधियों को कक्षा शिक्षण का हिस्सा बना सकते हैं। भाषा शिक्षा में केवल लिखित अभ्यासों और व्याकरण की परीक्षाओं पर निर्भर रहने के बजाय वास्तविक बातचीत को सुनने और समझने के अवसर भी उपलब्ध होने चाहिए।

नई भाषा सीखना एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिसके लिए धैर्य, अभ्यास और भाषा के साथ नियमित संपर्क आवश्यक है। सुनने से विद्यार्थी ध्वनियों को पहचानते हैं, अभिव्यक्तियों को समझते हैं, व्याकरणिक पैटर्न खोजते हैं और आत्मविश्वास विकसित करते हैं। यह अपरिचित भाषा और सार्थक संचार के बीच एक पुल का काम करता है।

सबसे प्रभावी तरीका सुनने को बोलने के विरुद्ध रखना नहीं, बल्कि सुनने को बोलने, पढ़ने और लिखने की नींव बनाना है। विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक सुनना, नियमित अभ्यास करना, गलतियों को स्वीकार करना और धीरे-धीरे वास्तविक बातचीत में भाग लेना चाहिए।

नई भाषा तब समझ में आने लगती है, जब उसकी ध्वनियाँ परिचित लगने लगती हैं और शब्द अर्थ व्यक्त करने लगते हैं। धाराप्रवाह बोलने से पहले अक्सर निरीक्षण, पहचान और समझ का एक शांत चरण आता है।

पहले सुनें, फिर बोलें ऐसा नियम नहीं है जो बोलने से रोकता हो। यह याद दिलाता है कि प्रभावी संचार की शुरुआत दूसरों को समझने से होती है। ध्यानपूर्वक सुनना सीखकर हम न केवल नई भाषा बोलने के लिए तैयार होते हैं, बल्कि विभिन्न लोगों, संस्कृतियों और विचारों से अधिक गहराई से जुड़ने की क्षमता भी विकसित करते हैं।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात शिक्षाविद्
स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

रात के अंधेरे में नदी से बालू की चोरी, दिन में सड़कों पर उड़ती धूल



बालू माफिया के आगे बेबस दिख रहा तंत्र, अवैध खनन और परिवहन पर प्रभावी कार्रवाई को लेकर उठे सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़





जिले में बालू के अवैध उत्खनन और परिवहन को लेकर एक बार फिर प्रशासनिक निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। आरोप है कि रात के अंधेरे में नदियों से बालू का अवैध उठाव किया जा रहा है और भारी वाहनों के जरिए उसका परिवहन जारी है। दूसरी ओर, बालू लदे वाहनों की लगातार आवाजाही से सड़कों पर धूल उड़ने, यातायात प्रभावित होने और स्थानीय लोगों को परेशानी होने की शिकायतें सामने आ रही हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि खनिज संपदा की सुरक्षा और अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए जिम्मेदार विभाग आखिर कितने प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभा रहे हैं?

अवैध कारोबार पर नियंत्रण की चुनौती जिले के विभिन्न क्षेत्रों में बालू के कारोबार को लेकर उठ रही शिकायतें केवल राजस्व की हानि तक सीमित नहीं हैं। नदी से अनियंत्रित बालू निकासी पर्यावरणीय संतुलन, नदी के प्राकृतिक प्रवाह और आसपास के क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए भी गंभीर चुनौती बन सकती है। यदि निर्धारित नियमों और अनुमति की शर्तों का उल्लंघन कर उत्खनन किया जा रहा है, तो इसकी निष्पक्ष जांच और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई आवश्यक है।

स्थानीय स्तर पर यह भी सवाल उठ रहा है कि यदि बालू का अवैध परिवहन लंबे समय तक जारी रहता है, तो संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था कितनी सक्रिय है। खनन विभाग, स्थानीय प्रशासन, पुलिस और परिवहन से जुड़े अधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय के बिना इस तरह की गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण मुश्किल है।

सड़कों पर धूल, आम लोगों की परेशानी भारी वाहनों की आवाजाही और सड़कों पर उड़ती धूल से स्थानीय निवासियों, राहगीरों तथा छोटे कारोबारियों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धूल नियंत्रण के लिए पानी का छिड़काव अस्थायी राहत दे सकता है, लेकिन इससे समस्या का स्थायी समाधान नहीं निकलता। जरूरी है कि वाहनों की आवाजाही, निर्धारित मार्गों, भार सीमा और परिवहन संबंधी नियमों का नियमित निरीक्षण किया जाए।

कार्रवाई के साथ जवाबदेही भी जरूरी प्रशासन को चाहिए कि संदिग्ध घाटों और परिवहन मार्गों पर औचक जांच करे, वैध खनन अनुमति तथा परिवहन दस्तावेजों का सत्यापन कराए और नियमों के उल्लंघन की पुष्टि होने पर नियमानुसार कार्रवाई करे। साथ ही, जब्त वाहनों, दर्ज मामलों और वसूले गए जुर्माने का विवरण सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि बालू के अवैध कारोबार पर रोक लगाने के लिए जिम्मेदार तंत्र ठोस कार्रवाई कब करेगा? आरोपों की निष्पक्ष जांच और नियमित निगरानी से ही सच्चाई सामने आएगी तथा प्राकृतिक संसाधनों की लूट और आम जनता की परेशानी पर प्रभावी अंकुश लग सकेगा।

हातिबाड़ी पुलिस की छापेमारी से आबकारी विभाग की जवाबदेही पर सवाल



एक क्विंटल महुआ पोच नष्ट, 150 लीटर अवैध शराब जब्त; मदिरा निर्माण केंद्रों के दस्तावेज, एग्रीमेंट और बकाया राशि की जांच की उठी मांग

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष राउरकेला

हातिबाड़ी थाना पुलिस की कार्रवाई में करीब एक क्विंटल महुआ पोच नष्ट करने तथा 150 लीटर अवैध शराब और निर्माण सामग्री जब्त किए जाने के बाद जिले में अवैध मदिरा कारोबार पर नियंत्रण को लेकर आबकारी विभाग की भूमिका चर्चा के केंद्र में है। सवाल यह है कि अवैध शराब निर्माण के विरुद्ध कार्रवाई में पुलिस को बार-बार अग्रणी भूमिका क्यों निभानी पड़ रही है? क्या आबकारी विभाग की निगरानी व्यवस्था पर्याप्त प्रभावी है?

ओडिशा सरकार की आबकारी नीति में शराब के निर्माण, भंडारण, परिवहन और बिक्री को नियंत्रित करना, राजस्व की हानि रोकना तथा अवैध और मिलावटी शराब पर अंकुश लगाना विभाग के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है। इसके बावजूद स्थानीय स्तर पर कुछ मदिरा निर्माण केंद्रों के दस्तावेज, एग्रीमेंट और बकाया भुगतान को लेकर अनियमितताओं की चर्चाएं होने के दावों की निष्पक्ष जांच जरूरी है। हालांकि, संबंधित केंद्रों के खिलाफ इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी आवश्यक है।

सवाल सिर्फ महुआ पोच नष्ट करने तक सीमित नहीं। यदि किसी निर्माण केंद्र का एग्रीमेंट या जरूरी दस्तावेज अधूरे हैं, अथवा मांग नोटिस के बावजूद वैधानिक बकाया जमा नहीं किया गया है, तो उसके संचालन की अनुमति किस आधार पर जारी है? संबंधित अधिकारियों ने निरीक्षण किया या नहीं, नोटिस पर क्या कार्रवाई हुई और राजस्व वसूली की स्थिति क्या है—इन सवालों का जवाब सार्वजनिक होना चाहिए।

गौरतलब है कि 10 से 14 अक्टूबर 2026 के बीच ओडिशा आबकारी विभाग ने राज्यव्यापी अभियान में 958 मामले दर्ज किए और 470 लोगों को गिरफ्तार किया। विभाग ने अवैध शराब सहित मादक पदार्थ भी जब्त किए। इससे यह कहना उचित नहीं होगा कि विभाग कोई कार्रवाई नहीं कर रहा; लेकिन सुंदरगढ़ और राउरकेला क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर निगरानी की प्रभावशीलता की समीक्षा फिर भी जरूरी है।

सड़कों के किनारे संचालित शराब दुकानों की वैधानिक स्थिति, नियमों के अनुपालन और जनसुरक्षा से जुड़े पहलुओं की भी जांच होनी चाहिए। निर्माण केंद्रों के संचालकों और अधिकारियों के बीच कथित संदिग्ध संपर्कों की शिकायत मिले तो सक्षम एजेंसी कानूनसम्मत तरीके से रिकॉर्ड की जांच कर सकती है।

अब जरूरत आरोप-प्रत्यारोप की नहीं, जवाबदेही की है। जिला प्रशासन, पुलिस अधीक्षक और आबकारी विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को संयुक्त समीक्षा कर लाइसेंस, एग्रीमेंट, बकाया राशि, निरीक्षण और कार्रवाई का ब्योरा सामने रखना चाहिए। गरीब और आम नागरिकों पर कार्रवाई के साथ बड़े कारोबारियों के मामलों में भी समान कानून लागू होना ही निष्पक्ष प्रशासन की कसौटी है।

प्रगति चावल कांड: संगठित अपराध की आशंका, सफेदपोशों की भूमिका की जांच तेज

एसपी नितेश वधवानी ने कहा—जांच जारी, लैब रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई; सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दोषियों पर कठोर कार्रवाई और पूरे नेटवर्क के पर्दाफाश की उठाई मांग

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।



ब्रांड के नाम पर कथित नकली चावल की बिक्री का मामला अब महज व्यापारिक धोखाधड़ी तक सीमित नहीं रह गया है। प्रगति ब्रांड के नाम पर करीब 400 बोरी संदिग्ध चावल की बरामदगी ने बाजार में ब्रांड की विश्वसनीयता, उपभोक्ताओं के अधिकार और खाद्य सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस अधीक्षक नितेश वधवानी ने इस प्रकरण को संगठित अपराध का हिस्सा बताते हुए स्पष्ट किया है कि जांच जारी है और दोषियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस के अनुसार, ब्रांड प्रोटेक्टर से मिली सूचना और संबंधित कंपनी की शिकायत के आधार पर 13 अक्टूबर को प्लांट साइट तथा दीनानाथ लेन स्थित गोदामों में छापेमारी की गई। कार्रवाई के दौरान नरेश अग्रवाल के गोदाम से करीब 350 बोरी और संजय अग्रवाल के गोदाम से लगभग 50 बोरी चावल बरामद किया गया। चावल के नमूने प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजे गए हैं। जीएसटी विभाग को भी सूचना दी गई है। हालांकि, चावल की वास्तविक गुणवत्ता, ब्रांड के कथित दुरुपयोग और संभावित वित्तीय अनियमितताओं की पुष्टि संबंधित जांच के निष्कर्षों के बाद ही हो सकेगी।

संगठित अपराध की आशंका, जांच का दायरा व्यापक हो संगठित अपराध का अर्थ केवल एक व्यक्ति द्वारा किया गया गैरकानूनी कृत्य नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार कई व्यक्तियों की मिलीभगत, सुनियोजित गतिविधियों, आपूर्ति श्रृंखला और अवैध लाभ के लिए लगातार किए जाने वाले अपराधों से भी हो सकता है। इसलिए जांच का केंद्र केवल बरामद चावल तक सीमित नहीं रहना चाहिए। माल कहां से आया, उसकी पैकिंग किसने की, कथित ब्रांड का इस्तेमाल कैसे हुआ, वितरण किन माध्यमों से किया गया और इससे किन लोगों को लाभ मिला—इन सभी बिंदुओं की निष्पक्ष पड़ताल जरूरी है।

जमानत पर राहत, लेकिन सवाल अब भी बरकरार मामले में नामजद संजय और नरेश अग्रवाल को गिरफ्तारी के बाद अदालत से जमानत मिल चुकी है। जमानत मिलना दोषमुक्ति नहीं है और न ही इससे आरोप स्वतः प्रमाणित हो जाते हैं। पुलिस द्वारा जमानत संबंधी परिस्थितियों की समीक्षा तथा आगे की वैधानिक कार्रवाई का निर्णय कानून और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर होना चाहिए।

सरकार से कड़ी कार्रवाई की मांग सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि यदि जांच में उपभोक्ताओं को धोखा देने, ब्रांड की नकल करने या खाद्य सुरक्षा से खिलवाड़ करने के प्रमाण मिलते हैं, तो सरकार और संबंधित विभागों को कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। उनका आग्रह है कि पूरे नेटवर्क की पहचान कर जिम्मेदार व्यक्तियों पर कानून के अनुरूप कार्रवाई हो तथा ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए बाजार की निगरानी मजबूत की जाए।

अब असली कसौटी केवल चावल की बरामदगी नहीं, बल्कि निष्पक्ष जांच, साक्ष्यों के आधार पर जवाबदेही और उपभोक्ताओं के भरोसे की बहाली है। यदि इस मामले में संगठित नेटवर्क की पुष्टि होती है, तो उसकी जड़ तक पहुंचना प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

धर्मकांटों की जांच पर सवाल, लीगल मेट्रोलॉजी विभाग की कार्यप्रणाली कठघरे में

ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन ने उठाए गंभीर आरोप; अधिकारी ने मांगी 10–15 दिन की मोहलत, स्टाफ की कमी का हवाला देकर जताई असमर्थता

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।

औद्योगिक नगरी राउरकेला, पानपोष, मेन रोड, वेदव्यास, कुआरमुण्डा क्षेत्र और राजगंगपुर में विधिक मापविज्ञान (लीगल मेट्रोलॉजी) विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन की टीम ने विभागीय अधिकारी के समक्ष धर्मकांटों की जांच में कथित अनियमितताओं, पेट्रोल पंपों पर वजन-माप में संभावित छेड़छाड़ और स्टांपिंग प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी का मुद्दा उठाया। लेकिन एसोसिएशन के अनुसार, त्वरित जांच और कार्रवाई के बजाय अधिकारी ने 10 से 15 दिन का समय मांगा तथा कर्मचारियों की कमी को अपनी असमर्थता का कारण बताया।

बिना समुचित जांच स्टांपिंग का आरोप एसोसिएशन ने आरोप लगाया कि कई दुकानों में उपकरणों का समुचित भौतिक सत्यापन किए बिना स्टांपिंग की जा रही है। देर रात तक सेवानिवृत्त चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों द्वारा स्टांपिंग किए जाने और इस प्रक्रिया में कथित अवैध वसूली की शिकायतें भी सामने रखी गईं। इन आरोपों की स्वतंत्र जांच और विभागीय रिकॉर्ड का सत्यापन आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति या अधिकारी की जिम्मेदारी जांच में प्रमाण मिलने के बाद ही तय की जानी चाहिए।

धर्मकांटों और पेट्रोल पंपों की जांच क्यों जरूरी? एसोसिएशन ने विभिन्न फैक्ट्रियों, सड़क किनारे संचालित धर्मकांटों, ट्रेडर्स के गोदामों और पेट्रोल पंपों पर लगे उपकरणों की निष्पक्ष जांच की मांग की। औद्योगिक माल की तौल में मामूली अंतर भी बड़े व्यापारिक लेन-देन में आर्थिक नुकसान का कारण बन सकता है।

कानूनी प्रावधान: विधिक मापविज्ञान अधिनियम, 2009 की धारा 24 के तहत व्यापार में उपयोग होने वाले बाट-माप उपकरणों का निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार सत्यापन और स्टांपिंग आवश्यक है। विधिक मापविज्ञान (सामान्य) नियम, 2011 का नियम 27 निर्धारित अंतराल पर पुनः सत्यापन और स्टांपिंग का प्रावधान करता है।

***स्टाफ की कमी या निगरानी में खामी?**

एसोसिएशन के मुताबिक, अधिकारी ने कार्यालयों के बंद रहने और निरीक्षण में देरी के सवाल पर भी कर्मचारियों की कमी का हवाला दिया। सवाल यह है कि यदि संसाधन सीमित हैं, तो उपलब्ध कर्मचारियों की तैनाती, नियमित निरीक्षण और शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई की व्यवस्था क्यों प्रभावी नहीं दिख रही?

एसोसिएशन के सदस्यों में गोविन्द अग्रवाल, प्रशांत पाणी, रोहित यादव, जगन्नाथ पंडा, राजेश जेथलिया, राजेंद्र गिरी व अन्य ने उच्चाधिकारियों से हस्तक्षेप कर विशेष जांच दल गठित करने, धर्मकांटों एवं पेट्रोल पंपों का औचक निरीक्षण कराने और कथित वसूली की जांच करने की मांग की है।

अब जरूरत आश्वासन की नहीं, जवाबदेही की है। प्रशासन को शिकायतों की निष्पक्ष जांच कर यह स्पष्ट करना चाहिए कि नियमों का पालन हो रहा है या नहीं। उपभोक्ताओं और कारोबारियों के हितों की रक्षा के लिए विभागीय पारदर्शिता तथा प्रभावी निगरानी अनिवार्य है।





टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: साइबर सुरक्षा पर सुप्रीम कोर्ट सख्त: बाल यौन शोषण सामग्री रोकने के लिए राष्ट्रीय SOP को अंतिम रूप देने में जुटा केंद्र

15 अक्टूबर 2026 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने Child Sexual Abuse Material (CSAM/CSEAM) से संबंधित मामले की सुनवाई की और इस मुद्दे पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए केंद्र सरकार को इसे "बहुत गंभीरता से" लेने का निर्देश दिया। न्यायालय ने उल्लेख किया कि MeitY ने एक मसौदा SOP प्रस्तुत किया है, लेकिन वह अभी अंतिम रूप में नहीं है। इसलिए पीठ ने SOP को पूरा करने और अतिरिक्त विवरण दाखिल करने के लिए समय बढ़ाया। मामला एक माह बाद पुनः सूचीबद्ध किया गया है।

MeitY का राष्ट्रीय CSAM/CSEAM SOP (2026) – मसौदा

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर प्रसारित होने वाले Child Sexual Abuse Material (CSAM/CSEAM) की रिपोर्टिंग, हटाने और जांच के लिए एक राष्ट्रीय स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (SOP) तैयार कर रहा है। यह SOP NCII (Non Consensual Intimate Imagery) SOP के ढांचे पर आधारित है, जिसे 2025 में अधिसूचित किया गया था और जिसमें 24 घंटे के भीतर हटाने, बहु एजेंसी समन्वय, तथा पीड़ित केंद्रित सुरक्षा उपायों का प्रावधान है।

यह SOP सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों, NHRC की सलाह, तथा सोशल मीडिया, मैसेजिंग ऐप्स और क्लाउड सेवाओं पर बढ़ते CSAM प्रसार की चिंताओं के आधार पर विकसित किया जा रहा है।

1. SOP का उद्देश्य

प्रस्तावित SOP का लक्ष्य:

- CSAM की रिपोर्टिंग और हटाने के लिए एकसमान राष्ट्रीय प्रक्रिया स्थापित करना।
- शिकायत प्राप्त होने पर 24 घंटे के भीतर हानिकारक सामग्री हटाना सुनिश्चित करना।
- IT Act, 2000 और IT Rules, 2021 के तहत मध्यस्थों की जवाबदेही को मजबूत करना।
- केंद्रीय एजेंसियों, राज्य पुलिस और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के बीच समन्वय बढ़ाना।
- पीड़ित केंद्रित सुरक्षा प्रदान करना, जिसमें गोपनीयता संरक्षण और परामर्श सहायता शामिल है।
- डिजिटल फॉरेंसिक और साक्ष्य संरक्षण को बेहतर बनाना ताकि धारा 67B, IT Act के तहत प्रभावी अभियोजन हो सके।

2. संरचनात्मक मॉडल (NCII SOP ढांचे पर आधारित)

MeitY, NCII SOP की संरचना को अपनाते हुए निम्नलिखित तंत्र शामिल कर रहा है:

A. समर्पित रिपोर्टिंग चैनल

- NCCRP (National Cyber Crime Reporting Portal)
- हेल्पलाइन 1930
- सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के इन ऐप रिपोर्टिंग टूल
- IT Rules, 2021 के तहत नियुक्त शिकायत अधिकारी
- स्थानीय पुलिस स्टेशन / साइबर सेल

B. अनिवार्य 24 घंटे में हटाना

मध्यस्थों को रिपोर्ट किए गए CSAM को 24 घंटे के भीतर हटाना या एक्सेस अक्षम करना होगा।

C. बहु एजेंसी समन्वय

SOP में निम्नलिखित एजेंसियों की समन्वित भूमिका शामिल होगी:

- MeitY – नीति, अनुपालन निगरानी, धारा 69A के तहत हटाने के आदेश
- I4C – शिकायतों का केंद्रीय भंडार और रूटिंग
- DoT – ISP के माध्यम से URL ब्लॉकिंग
- MHA – जांच पर्यवेक्षण और LEA समन्वय
- MWCD – पीड़ित सहायता और परामर्श
- राज्य पुलिस/साइबर सेल – FIR, जांच, डिजिटल फॉरेंसिक

D. स्वचालित पहचान एवं हैश मैचिंग

प्लेटफ़ॉर्म को अनिवार्य रूप से लागू करना होगा:

- हैश मैचिंग तकनीक
- AI आधारित पहचान प्रणाली
- पुनः अपलोड रोकथाम तंत्र
- CSAM फिंगरप्रिंट के लिए सुरक्षित राष्ट्रीय हैश बैंक

E. पीड़ित केंद्रित सुरक्षा उपाय

SOP सुनिश्चित करेगा:

- नाबालिगों और शिकायतकर्ताओं की गोपनीयता सुरक्षा
- साक्ष्यों का गोपनीय प्रबंधन
- वन स्टॉप सेंटर (OSC) के माध्यम से परामर्श और कानूनी सहायता
- द्वितीयक आघात को न्यूनतम करना

3. प्रस्तावित कार्यप्रवाह (संभावित SOP अनुक्रम)

1. शिकायत दर्ज करना उपयोगकर्ता/LEA द्वारा NCCRP, 1930, इन ऐप टूल या पुलिस स्टेशन के माध्यम से CSAM रिपोर्ट करना।
2. I4C और मध्यस्थ को रूटिंग शिकायत एक साथ I4C और प्लेटफ़ॉर्म के शिकायत अधिकारी को भेजी जाती है।
3. सत्यापन और वर्गीकरण मध्यस्थ स्वचालित + मैनुअल मूल्यांकन करता है।
4. 24 घंटे में हटाना सामग्री हटाई/अक्षम की जाती है; आवश्यकता होने पर DoT URL ब्लॉक करता है।
5. हैशिंग और रोकथाम सामग्री को राष्ट्रीय CSAM हैश बैंक में जोड़कर पुनः अपलोड रोका जाता है।
6. LEA जांच डिजिटल फॉरेंसिक, IP लॉग, अकाउंट मेटाडेटा, डिवाइस फिंगरप्रिंटिंग।
7. पीड़ित सहायता परामर्श, कानूनी सहायता, गोपनीयता संरक्षण।
8. अनुपालन रिपोर्टिंग मध्यस्थ MeitY और I4C को हटाने और कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं।

4. कानूनी एवं विनियामक आधार

- धारा 67B, IT Act, 2000 – CSAM के प्रकाशन, प्रसारण और ब्राउज़िंग को अपराध घोषित करता है।
- धारा 69A, IT Act – MeitY को बाल सुरक्षा हेतु ऑनलाइन सामग्री ब्लॉक करने का अधिकार देता है।
- IT Rules, 2021 – शिकायत मिलने पर मध्यस्थों को बाल यौन शोषण सामग्री हटाना अनिवार्य है।
- सुप्रीम कोर्ट निर्देश (2024–2026) – CSAM की सीधी रिपोर्टिंग भारतीय LEAs को अनिवार्य।
- NHRC सलाह (2023) – CSAM के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता।

5. कानून प्रवर्तन एजेंसियों (LEAs) पर अपेक्षित प्रभाव

A. साक्ष्य संरक्षण में तेजी

तेज़ हटाने से वायरल प्रसार कम होता है और मूल साक्ष्य सुरक्षित रहते हैं।

B. संरचित शिकायतें

NCCRP की समर्पित श्रेणी बेहतर वर्गीकरण और रूटिंग सुनिश्चित करती है।

C. बेहतर ट्रेसबिलिटी

मध्यस्थों का अनिवार्य सहयोग IP लॉग, मेटाडेटा, डिवाइस फिंगरप्रिंट उपलब्ध कराएगा।

D. पीड़ित को कम नुकसान

तेज़ हटाने से सामग्री का पुनः प्रसार रुकता है, जिससे आघात कम होता है।

E. एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय

I4C, DoT, MeitY और राज्य साइबर सेल एकीकृत कार्यप्रवाह में काम करेंगे।

6. भारत के लिए रणनीतिक महत्व

- भारत को CSAM हटाने के समर्पित प्रोटोकॉल वाले देशों की श्रेणी में स्थापित करता है।
- वैश्विक प्लेटफ़ॉर्म (Meta, Google आदि) के लिए अनुपालन दायित्व मजबूत करता है।
- अंतरराष्ट्रीय बाल सुरक्षा ढांचों (INHOPE, INTERPOL) के अनुरूपता बढ़ाता है।
- उभरते खतरों—जैसे डीपफेक CSAM और सिंथेटिक इमेजरी—के लिए स्केलेबल मॉडल तैयार करता है।

MeitY द्वारा राष्ट्रीय CSAM/CSEAM SOP का मसौदा तैयार किया जाना भारत की डिजिटल सुरक्षा संरचना में एक महत्वपूर्ण कदम है। NCII SOP मॉडल—24 घंटे में हटाना, बहु एजेंसी समन्वय, स्वचालित पहचान, और पीड़ित केंद्रित सुरक्षा—को अपनाकर यह SOP ऑनलाइन बाल यौन शोषण सामग्री के विरुद्ध राष्ट्रीय क्षमता को मजबूत करेगा और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की कार्रवाई को अधिक प्रभावी बनाएगा।

सरायकेला के लिए झारखंड सरकार एक केयरटेकर मात्र, आखिर इतिहास दफनाने में क्यों लगे हैं अधिकारी?



उपेक्षित है धार्मिक स्थल, खंडाधुआ आदि ऐतिहासिक परंपरा । बहुत कुछ कहता महाराजा आदित्य प्रताप सिंहदेव का पटेल को लिखा पत्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , कश्मीर में कश्मीरियों का विकास संभव पर सरायकेला , खरसावां में ओडिया जन मानस का क्यों नहीं ?इसपर किसकी ओछी राजनीति ,यह एक विचारणीय प्रश्न बना हुआ है 1948 से आज तक ।आज ऐतिहासिक शूर- वीरों को सम्मान नहीं दिया जाना महत्वपूर्ण धार्मिक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को झारखंड सरकार एवं उनके अधिकारियों द्वारा लूटा जाना बड़ा खेद जनक विचार व विषय है आजाद मुल्क में । आज भी उत्कलीय वीरों के धार्मिक स्थल को कोई तजर्बों नहीं मिलना लोगों को आंदोलित करता है । राजा खंडाधुआ करने जब जाते तो कोई सुरक्षा व समाचार तक सरकार नहीं देती जनता का ।जो महाराजा आदित्य प्रताप सिंहदेव के उस इकरार नामे व पत्र को और अधिक प्रासंगिक बना देता जिसे उन्होंने गवर्नर जनरल एवं आजादी के बाद सरायकेला को बिहार से हटाते हुए उड़ीसा में देने की मांग सरदार पटेल से की थी।यह D.O. No -O.F -6/49 .256,Dated7th.August 1949 वर्णित है ।

सवाल आता है झारखंड के इस सिंहभूम स्थित ₹सरायकेला खरसावां₹ दो देशी रियासत विलय पश्चात ओडिशा का एक राजस्व जिला का वास्तविक मालिक कौन ?? आखिर सरायकेला- खरसावां किसका -केंद्र/बिहार /झारखंड या ओडिशा का अंग आज भी किसका है ??

महाराजा हरि सिंह ने अपना कश्मीर स्टेट का विलय कभी भी पाकिस्तान में नहीं बल्कि भारत में किया था ,ठीक उसी प्रकार सरायकेला के अंतिम शासक राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव तथा खरसावां राजा ने अपना स्टेट का विलय बिहार में नहीं बल्कि उड़ीसा में 14 दिसंबर 1947 ,तथा 15 दिसंबर 1947 को उड़ीसा में रखे जाने हेतु सरदार पटेल के समक्ष किया था । जहां महत्वपूर्ण एक दस्तावेज भी हस्ताक्षरित हुए ।जिस पर स्पष्ट तौर पर लिखा गया है - completely marger with Orissa ,that to the culture of Odisha.Peace ,progress and prosperity of of the people .यह पहले ओडिशा का एक रेवेन्यू जिला भी रहा । इसके मायने बहुत है, इस इकरार नामे 1948 से प्रासंगिक बना है सरायकेला अन्तिम शासक राजा के पत्र का 1954 में उसे और अधिक मजबूत कर देता है ।

कुछ समय बाद इन दो पूर्व देशीय स्टेट में राजनीतिक उथल-पुथल कराई जाती है । जब सरदार पटेल को सारी बातें पता चलता है वे विचलित हो जाते । वे सरायकेला राजा के अनुरोध पर बिहार को सरायकेला खरसावां हिस्सा उड़ीसा को लौटाने हेतु पत्र लिख डालते । नेहरु -राजेंद्र प्रसाद की मनसा जगजाहिर हो जाता है । इन्हीं महत्वपूर्ण समय के बीच सरदार पटेल इस जग को छोड़कर चले जाते हैं । पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा डॉ राजेंद्र प्रसाद को मानो उनके राजनीतिक जीवन में पुनः वास्तविक आजादी मिल जाती है । वे कश्मीर हो या सरायकेला खरसावां हर जगह अपना दांव चलाते हैं । आज सरदार पटेल हमारे बीच नहीं है । पर उनके जगह इस गुजरात माटी के एक तेज तर्रार इंसान गृहमंत्री है ।जिन्होंने महाराष्ट्र में शरद पवार को ललकारते हुए कहा था कि आपकी अगली चार पीढी भी आ जाय तो भी धारा 70 .....।

आज भी सरायकेला खंडाधुआ उत्कलीय वीरों को याद दिलाता है जिन्होंने यहां कभी मुगल सम्राट व अंग्रेजों को झंडा गाड़ने नहीं दिया । खंडा यानी तलवार लिए लडा । आज खंडाधूआ में वही लोग उपेक्षित है ।खंडा धुआं में कोई सरकारी सहयोग नहीं या उन परिवारों को उनके परिस्थितियों पर जानकारी नहीं ।

। उसके बाद जहां से राजा मां वन दुर्गा को लेकर आते वह स्थल पेयजलापूर्ति विभाग ने अपने अधिकार में ले रखा है ।एक सैप्टिक टैंक भी बना दिया है अधिकारियों ने उस महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल पर । आज ओडिया के आंगन में ओड़िया ही गौण रह जाता है, इसे विकास कहते तो यह कैसी विकास स्वतंत्रता उसके लिए ।

अगर महाराजा आदित्य प्रताप का यह महत्वपूर्ण पत्र यही बताता है कि बिहार से बना झारखंड सरकार सरायकेला के लिए एक केयरटेकर मात्र है मालिक कदाचित नहीं । सरायकेला का भारतीय अधिराज्य में विलय गृहमंत्रालय के सौजन्य से ओडिशा में रखे जाने हेतु हुई थी पर झारखंड में रखकर शोषणकारी तत्व सक्रिय हैं क्यों ।

सरायकेला एवं खरसावां ब्रिटिश इंडिया का भाग नहीं बल्कि दो प्रिंसली इंडिया शासित रहे राज्य थे ।जिसका विलय दस्तावेज के बाद उस आधार पर देश, संविधान बना हैं । क्या झारखंड के चीफ सेक्रेटरी से लेकर आयुक्त, उपायुक्त इस दस्तावेज को जानते तक है या तरहीज भी कभी देते हैं ।

आज अगर 370 हट सकता है और कश्मीर का भारत में विलय को जायज़ माना जाता है तो हम सरायकेला खरसावां के प्रसंग में उड़ीसा में विलय को क्यों उचित नहीं मानेंगे ?

जिसपर डा०राजेंद्र प्रसाद, नेहरु आदि ने राजनीतिक रोटियां सेंकी । उस पर ओडिया विकास को रोककर राजनीति किसके लिए की गयी ?और अबतक यह चलेगा .....?? क्या सरायकेला खरसावां ओडिया देश में सबसे कमजोर प्राणी है , ओडिशा से लाकर बिहार ,झारखंड में रख देश दुनिया को दिखाने हेतु ।

रथयात्रा में CCTV खर्च को लेकर बड़े घोटाले का आरोप, 473 कैमरे लगाने और हटाने पर ₹1.51 करोड़ खर्च; AAP ने की जांच की मांग

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वर: इस वर्ष रथयात्रा के दौरान पुरी जिले में 175 स्थानों पर 473 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे। इस काम का ठेका राज्य के बाहर बेंगलुरु की एक कंपनी को दिया गया था। आरोप है कि इस कंपनी को इसके लिए 1 करोड़ 51 लाख 24 हजार रुपये से अधिक का भुगतान किया गया। यानी प्रति कैमरा लगभग 32 हजार रुपये खर्च किए गए। इतनी बड़ी राशि खर्च किए जाने के बावजूद यातायात और भीड़ को नियंत्रित करने में प्रशासनिक विफलता सामने आई। भगदड़ में कई लोगों की जान चली गई। इस घटना ने सीसीटीवी कैमरे लगाने पर खर्च की गई भारी राशि और उसकी उपयोगिता पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

सूचना का अधिकार (RTI) कानून के तहत प्राप्त जानकारी के आधार पर पुरी जिला आम आदमी पार्टी (AAP) ने प्रशासनिक खर्च में पारदर्शिता को लेकर संदेह जताया है। शनिवार को पार्टी कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में पार्टी ने इस खर्च की जांच कराने की मांग की। पार्टी के जिला अध्यक्ष संजीव महांति ने कहा कि पुरी जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तीर्थस्थल और पर्यटन शहर में लोगों की सुरक्षा के मामले में किसी भी तरह की लापरवाही स्वीकार नहीं की जा सकती। केवल कैमरे लगा देना पर्याप्त नहीं है। उनका चालू हालत में रहना, समय पर निगरानी होना और दुर्घटनाओं तथा अपराधों को रोकने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था का सक्रिय रहना भी जरूरी है।

उन्होंने मांग की कि मुख्यमंत्री इस मामले में स्पष्ट जवाब दें और पुरी के पुलिस अधीक्षक (SP) सभी सीसीटीवी कैमरों की सूची सार्वजनिक करें। साथ ही, पुरी में कितने सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, वे किन-किन स्थानों पर स्थापित हैं और उनमें से कितने वर्तमान में काम कर रहे हैं, इसकी स्पष्ट जानकारी भी सार्वजनिक की जाए। AAP ने कैमरे लगाने और हटाने पर हुए खर्च की विस्तृत जांच कराने की मांग की है। पार्टी ने यह भी सवाल उठाया कि इस काम के लिए ओडिशा की स्थानीय कंपनियों को अवसर क्यों नहीं दिया गया।

संजीव महांति ने चेतावनी दी कि यदि पार्टी की मांगें पूरी नहीं की गईं, तो आम आदमी पार्टी सड़क पर उतरकर आंदोलन करेगी।

एक्वापल्स ने वार्षिक सम्मेलन 2026 में 'पॉन्ड टू पोर्ट' टेक्नोलॉजी स्टैक का किया अनावरण; एक्वाप्रेन्योर्स और कर्मचारियों को किया सम्मानित

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: वर्ष 2023 में स्थापित भुवनेश्वर की एक्वा-टेक स्टार्टअप कंपनी एक्वापल्स ने रविवार, 4 अक्टूबर को नोवोटेल भुवनेश्वर में अपना वार्षिक सम्मेलन 2026 आयोजित किया। इस कार्यक्रम में निवेशकों, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के एक्वाप्रेन्योर्स (जलीय कृषि उद्यमियों), रणनीतिक साझेदारों और कंपनी के कर्मचारियों ने भाग लिया। सम्मेलन में व्यावसायिक गतिविधियों की व्यापक समीक्षा, तकनीक का प्रदर्शन तथा उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया।कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एक्वापल्स टेक्नोलॉजी स्टैक का शुभारंभ रहा। यह चार परस्पर जुड़े प्लेटफॉर्मों का एक एकीकृत सिस्टम है, जिसे वन्नामेई झींगा (Vannamei Shrimp) की फार्म से लेकर वैश्विक बाजार तक की पूरी यात्रा को पारदर्शी और व्यवस्थित तरीके से ट्रैक करने के लिए विकसित किया गया है। इस टेक्नोलॉजी स्टैक में चार प्रमुख प्लेटफॉर्म शामिल हैं। इनमें पॉन्ड टेक स्टैक, जो कटाई से पहले तालाब की स्थिति और स्वास्थ्य का आकलन करता है; श्रिमप्रो एआई (ShrimPro AI), जो झींगा पालन चक्र का रिकॉर्ड रखता है; नेक्सस एटीआईपी (Nexus ATIP), जो डेटा को व्यापार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियों में परिवर्तित करता है; और एक्सपोर्ट कंप्लायंस स्टैक, जो निर्यात से जुड़े दस्तावेजों की प्रक्रिया को स्वचालित करता है। ये सभी प्लेटफॉर्म मिलकर अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को झींगा के स्रोत और उसकी उत्पत्ति से संबंधित एक ऐसा एकीकृत, छेड़छाड़-रोधी और ट्रेस करने योग्य रिकॉर्ड उपलब्ध कराते हैं, जिससे उत्पाद की फार्म से बंदरगाह तक की पूरी यात्रा का पता लगाया जा सकता है।

महत्वपूर्ण उपलब्धियों से भरे वर्ष का जश्न मनाते हुए कंपनी ने बताया कि उसे बैंकॉक में आयोजित रिस्पॉन्सिबल सीफूड समिट के दौरान रिस्पॉन्सिबल सीफूड इनोवेशन अवॉर्ड्स 2026 की एक्वाकल्चर श्रेणी में फाइनलिस्ट के रूप में चुना गया। इसके अलावा, कंपनी ने लगातार दूसरे वर्ष ग्रेट प्लेस टू वर्क (Great Place To Work) प्रमाणन भी हासिल किया। इस अवसर पर एक्वापल्स के सह-संस्थापक, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ अभिषेक द्विवेदी ने कहा, "एक्वापल्स की शुरुआत एक सरल विश्वास के साथ हुई थी—एक छोटे तालाब वाले किसान को भी वही वैज्ञानिक तकनीक, वही बाजार और वही सम्मान मिलना चाहिए, जो किसी बड़े निर्यातक को मिलता है। आज हमने जिस तकनीक का अनावरण किया है, उसे इस कमरे में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति ने मिलकर तैयार किया है।"

नई तकनीक के व्यावसायिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कंपनी के सह-संस्थापक एवं चीफ ग्रोथ ऑफिसर अभिलाष द्विवेदी ने कहा, "हर खरीदार एक सवाल पूछता है—क्या आप बता सकते हैं कि यह झींगा कहां से आया है? इस तकनीक के साथ हमारा जवाब है—हां, तालाब से बंदरगाह तक, एक ही रिकॉर्ड में।" कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के रूप में NABVENTURES Limited के श्री शाश्वत एस. गोयल, IAN Alpha Fund की सुश्री आरुषि मेहता, Growthally के श्री लक्ष्मीकांत बोहरा, Nabkisan Finance Limited के श्री अमेय सावंत तथा PwC की सुश्री निशि अग्रवाल उपस्थित रहीं।

'पॉन्ड टू पोर्ट एक्सीलेंस अवॉर्ड्स' समारोह के दौरान कंपनी ने ओडिशा के भद्रक और आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी क्षेत्र के उत्कृष्ट एक्वाप्रेन्योर्स को सम्मानित किया। इसके साथ ही खरीद, उत्पादन, निर्यात, वित्त, मानव संसाधन (एचआर) और प्रौद्योगिकी विभागों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को भी सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर एमिरेट्स लॉजिस्टिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को लॉजिस्टिक्स पार्टनर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023